बीनू का सपना

(पर्यावरण पर आधारित बाल उपन्यास)

अखिलेश श्रीवास्तव "चमन"

मीरा पब्लिकेशन्स

49बी/37, न्याय मार्ग, इलाहाबाद

ISBN 81-88211-20-6

प्रकाशक

मीरा पब्लिकेशन्स

49बी/37 न्याय मार्ग, इलाहाबाद

❑

मुद्रक

सुलेख मुद्रणालय

148 हीवेट रोड, इलाहाबाद

❑

प्रथम संस्करण : 2003

❑

मूल्य : 75/- रुपये
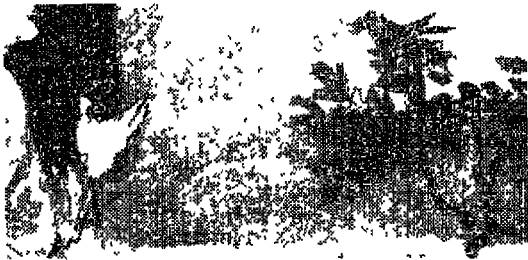
बीनू का सपना

.न के कारण रात में बीनू को बहुत गहरी नी
ह और दिनों की अपेक्षा अधिक देर तक सो
ने आवाज लगाई तब जा कर उसकी नींद खु
ता हुआ उठ बैठा। आँगन में चारों तरफ सुनह
खपरैल तथा मुंडेर पर गौरेयों का झुण्ड फुद
घर के सामने वाली नीम की ऊँची डाल प
चोंच से पंख खुजला रहा था। सुबह की ठंड
ष प्रकार की ताजगी का आभास करा रही थ
ग बीनू को कई वर्षों के बाद देखने को मिल
ा बैठा वह गौरेयों की गतिविधियाँ निहार रहा
छ याद आया। उसने जल्दी-जल्दी आँख-मुँ
ें पहनीं और घर से निकल पड़ा।

"बीनू बेटे! यह सुबह-सुबह कुल्ला-दातुन किये बगैर तुम कहाँ चल दिए?" दादा जी ने पीछे से आवाज लगाई।

"बस......अभी आया दादा जी...बस दो मिनट में..." बीनू ने उत्तर दिया और दौड़ता हुआ जा कर गली में मुड़ गया।

यद्यपि लगभग दस वर्षों का समय बीत चुका था फिर भी बीनू को गाँव के रास्ते अच्छी तरह से याद थे। एक गली से दूसरी गली और दूसरी गली से तीसरी गली होता दायें, बायें मुड़ता वह शीघ्र ही नदी के किनारे पहुंच गया। लेकिन यह क्या? नदी के किनारे पहुंचते ही बीनू एकदम से चौंक पड़ा। उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। "ऐं, मैं किसी दूसरी जगह तो नहीं आ गया?" उसने मन ही मन सोचा और चारों तरफ ध्यान से देखने लगा। उसे दूर से ही बाजार के मोड़ पर बिशुनी हलवाई की दुकान दिख गई जहाँ से दादी जी गरमा-गरम जलेबियाँ खरीदा करती थीं। बड़ी सी तोंद लटकाए काला-कलूटा बिशुनी हलवाई भी दिख गया जो दुकान की भट्ठी में कोयला डालने के बाद भट्ठी के सामने जमीन पर बैठा पंखे से हवा कर रहा था। बीनू के बायें हाथ की तरफ परशुराम जी का वह प्राचीन मन्दिर भी था जिसमें वह अपनी दादी जी के साथ नित्य प्रातः आया करता था। इसी मन्दिर के पिछवाड़े की दीवार से सट कर नदी घाट की चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियां शुरू होती थीं।

जगह दूसरी नहीं थी। बीनू बिल्कुल सही जगह पर आया था। लेकिन उस जगह का स्वरूप बदल गया था। नदी के किनारे पहुँचने और वहाँ की स्थिति देखने के बाद बीनू का सारा उत्साह समाप्त हो गया। घर से यहाँ आते समय वह जितना ही अधिक खुश था अब उतना ही अधिक दुःखी और उदास हो गया। यहाँ

तो खड़ा हो पाना भी मुश्किल हो रहा था। वह जैसे-तैसे पाँच-सात मिनट तक गुमसुम, उदास खड़ा रहा फिर धीरे-धीरे घर की तरफ लौट पड़ा।

लगभग दस वर्षों के बाद बीनू अपने गाँव, अपने दादा-दादी के पास आया था। वह जब छोटा था तब अपनी मम्मी के साथ यहीं गाँव में ही दादा-दादी के पास रहता था। उसके पापा उन दिनों वाराणसी में नौकरी करते थे और हर शनिवार की रात वह गाँव आ जाया करते थे। बाद में जब पापा की बदली मेरठ हो गयी तो बीनू और उसकी मम्मी भी पापा के साथ मेरठ चले गये। वहीं एक स्कूल में बीनू का नाम भी लिखा दिया गया। उसके बाद बीनू का गाँव आना जाना बन्द हो गया क्योंकि एक तो मेरठ से उसका गाँव बहुत दूर था, दूसरे बीनू के स्कूल में छुट्टियाँ भी बहुत कम होती थीं। अब प्रायः उसके पापा अकेले ही गाँव जा कर दादा जी, दादी जी से मिल आया करते थे। बीच-बीच में तीन-चार बार दादा जी, दादी जी भी मेरठ आ कर घूम गये लेकिन बीनू गाँव नहीं जा सका।

बीनू को गांव बहुत अच्छा लगता था। बचपन के पाँच-छः साल उसने गाँव में ही बिताये थे। इसलिए गांव से जुड़ी ढेर सारी यादें उसकी स्मृति में स्थायी रूप से अंकित थीं। उसका गाँव कोई साधारण सा गाँव नहीं बल्कि एक छोटा सा कस्बा था। कस्बे के उत्तरी छोर पर बस अड्डा था। बस अड्डा के दक्षिण तरफ आम, जामुन, महुआ, कटहल, आदि के घने बगीचे थे। उन बगीचों के बाद कच्चे, पक्के मकानों की बस्ती प्रारम्भ होती थी जो बाजार के पास तक फैली थी। कस्बे के दक्षिण तरफ बाजार था और बाजार से सटी हुई सरयू नदी बहती थी। नदी के किनारे एक लम्बा-चौड़ा

पक्का सीढ़ीदार घाट बना था और घाट से सटा हुआ एक प्राचीन मंदिर था जो परशुराम मंदिर के नाम से प्रसिद्ध था। इस मंदिर के अन्दर अलग-अलग कमरों में परशुराम जी, हनुमान जी, दुर्गा जी, शंकर भगवान तथा राम, लक्ष्मण और सीता जी की मूर्तियाँ स्थापित थीं।

बीनू की दादी तथा मुहल्ले की कुछ और औरतें जैसे ऊषा की दादी, निर्मला की अम्मा तथा पारस की बुआ आदि मुँह अँधेरे नियमित रूप से नदी नहाने जाती थीं। दादी की अँगुली पकड़े बीनू भी उनके साथ हो लेता था। परशुराम मंदिर के पीछे स्थित घाट पर दाहिनी तरफ औरतें तथा थोड़ा हट कर बायीं तरफ पुरुष स्नान करते थे। घाट की सीढ़ियों की कुल संख्या हमेशा ही बीनू के लिए एक पहेली बनी रही क्योंकि कुछ सीढ़ियाँ हर समय पानी के अन्दर ही डूबी रहती थी। बीनू के मन में अनेकों बार इच्छा हुई थी कि वह नीचे तक उतर कर सीढ़ियों की कुल संख्या गिन डाले। लेकिन कभी भी ऐसा संभव न हो सका दादी जी उसे पानी के अन्दर डूबी दो-तीन सीढ़ियों से आगे जाने ही नहीं देती थीं। दादी जी स्वयं नहाने से पहले बीनू को नहला कर उसे अपने सूखे कपड़ों और पूजा की डोलची के पास बिठा देतीं उसके बाद स्वयं गले तक पानी में उतर कर खूब देर तक नहाती रहतीं। उन दिनों सवेरे-सवेरे नदी में नहाने वाले स्त्री-पुरुषों की भारी भीड़ देखते बनती थी।

नदी घाट से थोड़ा हट कर पश्चिम तरफ एक बगीचा भी था जिसमें आम, अमरूद, महुआ पीपल तथा नीम आदि के पन्द्रह-बीस पेड़ थे। नदी नहाने वाले अधिकांश लोग इसी बगीचे की नीम से दातुन तोड़ कर दाँत साफ करते तथा नहा चुकने के बाद पीपल की जड़ों पर जल चढ़ा कर पूजा किया करते थे। कुछ बड़े पेड़ों की

डालें, नदी की दिशा में बढ़ आयी थीं। बहुत से लड़के इन डालों पर चढ़ जाते और वहीं से नदी में छपाक्-छपाक् कूदते थे। नदी में गिरने के बाद पल-दो पल के लिए वे पानी के अन्दर जाते फिर तुरन्त सर झटकारते हुए पानी के सतह पर आ जाते और तैरने लगते। अपने से बड़े बच्चों को इस प्रकार नदी में कूदते और तैरते देख कर बीनू को रोमांच हो उठता था। वह मन ही मन सोचता कि बस जरा सा और बड़ा हो जाय तो वह भी इसी प्रकार डाल के ऊपर से नदी में कूदेगा और घंटों तैरा करेगा।

नदी नहाने के बाद बीनू की दादी तथा अन्य सभी औरतें पूजा की डोलची लिए सीधे मंदिर में जातीं और बारी-बारी से सभी कोठरियों में जा कर सभी मूर्तियों की पूजा किया करती थीं। बीनू को इस पूजा, पाठ से कोई खास मतलब नहीं होता था। उसे तो बस शंकर जी की मूर्ति के पास ऊँचाई पर लटका बड़ा सा घंटा बजाने में ही आनन्द आता था। दादी जी जितनी देर तक पूजा करतीं बीनू उछल-उछल कर घंटा बजाता रहता था। फिर दादी जी के साथ मंदिर से निकलने के बाद वह बाजार के मोड़ पर स्थित बिशुनी हलवाई की दुकान के सामने आ कर खड़ा हो जाता था। उस समय बिशुनी हलवाई गरमा-गरम जलेबियाँ छानता रहता था। दादी जी अपने आँचल की गाँठ खोल कर पैसे निकालतीं और बीनू के लिए जलेबी खरीदती थीं। जलेबी का ठोंगा हाथ में लिए आगे-आगे दौड़ता बीनू घर लौट आता था।

उन दिनों गाँव में सिर्फ खाने, सोने और जी भर खेल कूद करने के सिवा बीनू के पास और कोई काम न होता था। मुहल्ले के ढेर सारे बच्चे उसके मित्र बन गये थे जिनके साथ वह सारे-सारे दिन घर के सामने वाले बगीचे में खेला करता था। गाँव में सबसे

बड़ा फायदा यह था कि मम्मी घर से बाहर नहीं निकलती थीं। इसलिए मम्मी की डाँट या मार का भय नहीं होता था। गाँव से मेरठ आते ही उसकी सारी स्वतंत्रता छिन गई। वहाँ एक तो वह स्कूल जाने लगा था और दूसरे जितनी देर घर में रहता उतनी देर सीधे मम्मी की निगरानी में रहना पड़ता था। फिर वहाँ न तो गाँव की तरह खुला मैदान था, न बाग-बगीचे थे और न ही गाँव के से मस्त-मौला मित्रों की टोली। जब गाँव छूटा तो कुछ ऐसा संयोग बना कि लगातार दस वर्षों तक वह गाँव आ ही नहीं सका। वह हर साल गाँव जाने का कार्यक्रम बनाता लेकिन ऐन वक्त पर कोई न कोई ऐसा व्यवधान आ जाता कि उसका कार्यक्रम रद्द हो जाता था। सबसे बड़ा व्यवधान तो यही था कि उसकी मम्मी मेरठ से गाँव तक उसे अकेले आने देने के लिए राजी ही नहीं होती थीं।

अब बीनू दसवीं कक्षा में पहुंच गया था, इसलिए अपने-आप को काफी बड़ा और समझदार मानने लगा था। उसने मम्मी से पहले ही आश्वासन ले लिया था कि हाई स्कूल की परीक्षा समाप्त होते ही वह गाँव अवश्य जाएगा। मम्मी की अनुमति मिलते ही उसने दादा जी को पत्र डाल दिया था और अपने पापा से कह कर ट्रेन में आरक्षण भी करा लिया था।

अन्ततः बीनू की परीक्षा प्रारम्भ हुई। जैसे-जैसे एक-एक प्रश्न-पत्र निपटता जाता बीनू की खुशी बढ़ती जाती थी। यह खुशी प्रश्न-पत्र अच्छा होने की उतनी नहीं थी जितनी इस बात की थी कि परीक्षा समाप्त होते ही उसे गाँव जाने को मिलेगा। जिस दिन अंतिम प्रश्न-पत्र समाप्त हुआ उस दिन बीनू की खुशी का ठिकाना न था। परीक्षा दे कर लौटते ही उसने सारी किताबें और कापियाँ समेट कर एक तरफ रख दीं तथा एयर बैग में कुछ कपड़े, कहानियों की किताबें

तथा कुछ पत्रिकायें आदि रख कर गाँव जाने की तैयारी कर ली। रेल का आरक्षण एक दिन बाद का था। अगले दिन शाम को उसके पापा उसे ले जा कर ट्रेन में बिठा आए। ट्रेन के चलते ही वह गाँव में बिताए अपने बचपन की स्मृतियों में खो गया। उसने मन ही मन तय किया कि इस बार गाँव की नदी में तैरना अवश्य सीखेगा।

सारी रात और लगभग आधे दिन की यात्रा के बाद अगले दिन दोपहर में वह बलिया के रेलवे स्टेशन पर उतरा और स्टेशन के पिछवाड़े की तरफ स्थित बस अड्डे से उसने अपने गाँव के लिए बस पकड़ी। शाम के समय अँधेरा होने से थोड़ा पहले वह गाँव पहुँचा। बीनू को यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि उसके गाँव के सूने से बस अड्डे पर अब चहल-पहल काफी बढ़ गई थी और पहले की धूल भरी कच्ची सड़क भी अब पक्की बन चुकी थी। पहले जहाँ बस अड्डे पर सिर्फ एक या दो बसें ही खड़ी रहती थीं वहाँ अब पाँच-छः बसे तथा पाँच-छः जीपें भी खड़ी थीं। लेकिन बस अड्डे से थोड़ा आगे बढ़ते ही बीनू की सारी खुशी उदासी में बदल गयी। उसने देखा कि बस अड्डे और गाँव की बस्ती के मध्य स्थित घना बगीचा कट चुका है, तथा उसकी जगह नये-नये मकान बन चुके हैं। बीनू घर पहुँचा तो उसे देख कर दादाजी, दादी जी की खुशी का ठिकाना न रहा। उन लोगों से बातचीत करते-करते अँधेरा घिर आया। रात को सोते समय उसने मन ही मन निश्चय किया कि अगले दिन सो कर उठते ही वह सबसे पहले नदी की तरफ जाएगा।

सवेरे नींद खुली तो बीनू को अपना रात का निश्चय ध्यान आया और वह नदी की तरफ दौड़ा पड़ा। लेकिन नदी के किनारे पहुँचने के बाद उसने जो कुछ देखा उससे उसकी सारी खुशी छू
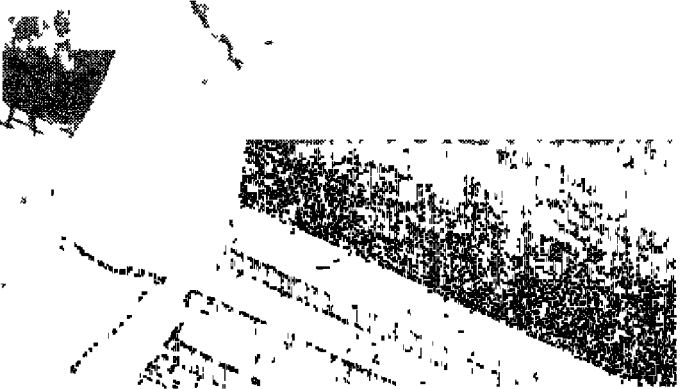
मन्तर हो गयी। अब वहाँ न तो पहले वाली नदी
सुथरा घाट था, न बगीचा था और न ही नदी नहाने
भीड़ थी। नदी सिकुड़ कर एक गन्दे नाले में ब
जगह-जगह पर पानी रुका था जिस पर काई की एक
जमी थी। सीढ़ीदार पक्का घाट कूड़ा घर बन चुका
कचरे तथा गन्दगी से अटा पड़ा था। नहाना तो दूर
खड़ा हो पाना भी मुश्किल था। घाट पर फैले कू
थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठे कई लोग शौच कर रहे
पश्चिम तरफ वाला बगीचा न जाने कब का कट
वहाँ कई मकान बन चुके थे। इन मकानों की नालिय
गिर रही थीं। मकानों को देखने से ही पता चल रहा
बनाते समय नदी की भी काफी जमीन दबा ली गई
पिछवाड़े यूकैलिप्टस के बीस-पच्चीस पेड़ एक कत
अपनी नाक पर रुमाल रखे बीनू थोड़ी देर तक गुम
फिर घर लौट आया।

घर लौट कर बीनू ने कुल्ला-दातुन किया, नहा-

किया और बाहर के बरामदे में कुर्सी डाल कर बैठ गया। अब बीनू को यहाँ बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। अब गाँव में उसकी एक दिन भी रुकने की इच्छा नहीं हो रही थी क्योंकि जिस नदी के आकर्षण में खिंचा वह गाँव तक आया था वह नदी न जाने कब की समाप्त हो चुकी थी। यद्यपि वह गाँव में पूरे दो सप्ताह रुकने का कार्यक्रम बना कर आया था लेकिन अब अगले ही दिन वापस लौटने की योजना बनाने लगा।

2

रात मे काफी देर तक बीनू को नींद नहीं आयी। बिस्तर में पड़ा-पड़ा वह नदी, घाट और बगीचे के विषय में ही सोचता रहा। स्कूल में जब कभी विज्ञान के शिक्षक सिनहा जी पर्यावरण, प्रदूषण, पेड़, पौधों के कटने से हो रही हानि तथा पृथ्वी पर तेजी से समाप्त हो रही जल-सम्पदा के विषय में बताते थे तो बीनू उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लेता था। वह सोचता था कि ये सारी समस्यायें सिर्फ शहरो की हैं। देहातों में तो इतने बाग-बगीचे हैं कि वहाँ प्रदूषण की कोई समस्या हो ही नहीं सकती। लेकिन आज अपने गाँव की बदली हालत देख कर उसे बहुत अफसोस हो रहा था। यही सब बातें सोचते-सोचते जाने कब उसकी आँख लग गई और वह स्वप्न लोक में बिचरने लगा।

बीनू नदी के किनारे टहल रहा था कि एकाएक उसकी निगाह एक दुबली, पतली मरियल सी बुढ़िया पर पड़ी, जो अकेली बैठी सुबक रही थी। उसके बाल बिखरे हुए थे, उसके चेहरे तथा पूरे शरीर पर चोट के निशान थे और उसके मैले, कुचैले कपड़े भी जगह-जगह से फटे हुए थे। बुढिया को देखने से ऐसा लगता था जैसे वह लम्बे समय से बीमार चल रही हो सूनसान स्थान पर

अकेली बैठी रो रही बुढ़िया को देख कर बीनू के मन में कौतूहल हुआ। तेज कदम बढ़ा कर वह बुढ़िया के पास पहुँचा।

"आप कौन है माता जी? और आप रो क्यों रही हैं? क्या तकलीफ है आपको?' बीनू ने पूछा।

"मैं नदी हूँ बेटा। तुम्हारे गाँव के किनारे बहने वाली नदी। मैं सैकड़ों वर्षों से हँसती, खिलखिलाती, सभी को खुशियाँ बाँटती बहती चली आ रही थी। लेकिन अब तुम्हारे गाँव वालों के अत्याचारों के कारण मेरा अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। ऐसा लगता है कि तुम्हारे गाँव के लोग मुझे पूरी तरह से मिटा कर ही दम लेंगे।" बीनू की आवाज सुनकर बुढ़िया ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपने आँसू पोछती हुई बोली।

"हाँ नदी माँ, आप सच कह रही हैं। आपकी दुर्दशा देख कर तो मैं स्वयं भी बहुत दुःखी हूँ। दस वर्षों पहले आप जितनी ही अधिक निर्मल थीं आज उतनी ही अधिक प्रदूषित हो चुकी हैं। आपके अन्दर कूड़ा-कचरा डाल कर लोगों ने आपको गन्दा नाला बना दिया है। वेग के साथ प्रवाहित होने वाला आपका पानी जगह-जगह गड्ढों में रुक कर सड़ रहा है। अगर ऐसे ही रहा तो सचमुच किसी दिन आप पूरी तरह से सूख जायेंगी।" बीनू ने कहा।

"मैं अपने लिए नहीं बीनू बल्कि तुम लोगों के लिए दुःखी हूँ। शायद तुम लोगों को इस बात का अनुमान नहीं है कि मेरे बीमार पड़ने या मेरे सूख जाने का कितना भयंकर परिणाम होगा। मेरा क्या। मैं तो वैसे भी निःस्वार्थ भाव से सेवा करती आ रही हूँ। लेकिन आफत तो तुम लोगों पर आएगी।"

"आप किस भयंकर परिणाम की बात कर रही है नदी माँ। कौन सी आफत आने वाली है हमरे गाँव वालों पर? जरा साफ-साफ बताइए।"

"पहले तो तुम मेरी सेवाओं और मुझसे होने वाले फायदों के बारे में जान लो। तभी, यह समझ सकोगे कि मेरे प्रदूषित हो जाने अथवा मेरे सूख जाने का वास्तव में क्या दुष्परिणाम होगा।"

"हाँ नदी माँ। बताइए, मैं आपकी पूरी बात सुनना चाहता हूँ।"

"बातें तो इतनी है बीनू कि पूरी बात बताना संभव ही नहीं है। फिर भी सुनो। मैं जीव-जन्तुओं के नहाने-धोने और पीने यानी कि दैनिक उपयोग के लिए तो स्वच्छ जल देती ही हूँ साथ ही पेड़, पौधों और फसलों की सिंचाई करके उनकी पैदावार भी बढ़ाती हूँ। मैं जब बाढ़ के दिनों में उफनती हूँ तो अपने किनारे के खेतों में उपजाऊ मिट्टी की एक नई परत डाल जाती हूँ जो किसानों के लिए वरदान सिद्ध होता है। मेरी तेज धाराएं जब पर्वतों की चट्टानों से रगड़ खाकर नीचे आती हैं तो अपने साथ विपुल मात्रा में रेत और बजरी ले आती हैं जो तुम लोगों के भवनों के निर्माण में काम आता है। मेरे अन्दर छोटी-बड़ी नावें और स्टीमर चलते हैं जिससे तुम लोगों को यातायात उपलब्ध होता है। पुराने समय में जब रेलें और बसें नहीं थीं तो सारा आवागमन और व्यापार हम नदियों के माध्यम से ही होता था। मेरे अन्दर मगर, घड़ियाल, मछलियाँ, कछुवे, घोंघे, केकड़े आदि नाना प्रकार के जीव-जन्तु तथा तमाम तरह की वनस्पतियाँ होती हैं जो मानव जाति के लिए बहुत उपयोगी होती है। यदि मैं सूख गई या प्रदूषित हो गयी तो लोगों को न तो खाने के लिए अन्न मिल सकेगा न पीने के लिए पानी। और ऐसी-ऐसी भयंकर बीमारियाँ फैलेंगी कि गाँव के गाँव, बस्ती की बस्ती का बेमौत सफाया हो जाएगा।"

"आप बिल्कुल सत्य कह रही हैं नदी माँ। वास्तव में मेरे गाँव वालों ने आपके साथ बहुत अत्याचार किया है। जब मैं छोटा था

और यही गाँव में ही रहता था तब मैं अपनी दादी के साथ यहां रोज नहाने के लिए आया करता था। मुझे अच्छी तरह से याद है कि उन दिनों आपका जल अत्यन्त निर्मल तथा बहाव काफी तेज था। इस बार मैं शहर से यही सोच कर आया था कि आपके निर्मल, शीतल जल में खूब नहाऊँगा और तैरना भी सीखूँगा। लेकिन यहाँ तो स्थिति ही बदली हुई है। नहाना तो दूर आपके किनारे खड़ा हो पाना भी मुश्किल हो गया है।''

बीनू अभी नदी से बातचीत कर रहा था उसी बीच एक तरफ से दुबली, पतली मरियल सी दस-बारह आकृतियां धीरे-धीरे चलती हुई आयी और नदी के पास आ कर चुपचाप बैठ गयीं।

''ये कौन लोग हैं नदी माँ?' बीनू ने नदी से प्रश्न किया।

''ये सारे मेरे बेटे और नाती, पोते हैं बीनू। जिनकी तुम्हारे गाँव वालों ने हत्या कर दी है और इनकी जमीनें हड़प ली हैं।'' नदी बोली।

''आपके नाती पोते? मेरे गाँव वालों ने हत्या कर दी है? जमीनें हड़प ली हैं? आप यह क्या कह रही है नदी माँ? मैं कुछ समझ नही पाया।'' बीनू ने आश्चर्य से कहा।

''बीनू। शायद तुम्हें याद हो पहले मेरे घाट के पश्चिम तरफ छायादार पेड़ों का एक बगीचा था।''

''हाँ-हाँ...मुझे खूब अच्छी तरह से याद है। वहीं जहाँ ये नये मकान बने हैं वही तो था वह बगीचा। कई वृक्षो की डालें तो आपके पानी के ऊपर तक बढ़ आयी थी। गाँव के लड़के उन डालों पर चढ़ कर पानी में छपाक्-छपाक् कूदते थे लेकिन अब तो वह बगीचा भी कट चुका है।''

''हाँ बीनू। बिल्कुल ठीक कहा तुमने। ये ही हैं उस बगीचे के प्यारे-प्यारे वृक्ष यानी मेरे बेटे और नाती-पोते। तुम्हारे गाँव के कुछ

दबग लोगो ने इनकी हत्या करके इनकी जमीन पर अपने मकान बनवा लिए हैं। उन्हें उतने पर भी संतोष नहीं हुआ तो मिट्टी और कूड़ा-कचरा भरते-भरते वे लोग मेरी छाती तक चढ़ आए हैं।'' नदी बोली।

''हाँ बीनू। यह नदी ही हम सभी की माँ, दादी, पड़दादी सभी कुछ है। सच बात तो यह है बीनू की नदी न सिर्फ हम वृक्षो की बल्कि सभी प्राणधारियों की माँ है। जल के बिना न तो हमारा जन्म संभव है और न ही जीवित रह सकना।'' आम की तरह चेहरे वाली एक दुबली सी आकृति ने कहा।

''मैं बरगद हूँ बीनू। मैं पिछले पैंसठ वर्षो से इस नदी के किनारे खड़ा था लेकिन आज कहीं मेरा नामो-निशान भी नहीं है। लोगों ने पहले मेरी डालें काटी फिर एक दिन मुझे जड़ से ही खोद कर फेंक दिया। यही हाल मेरे पड़ोसी पीपल का भी हुआ। मुझे अपने कटने का उतना दुःख नहीं है जितना इस बात का कि हम वृक्षों का विनाश करके लोग स्वयं अपने विनाश को न्यौता दे रहे हैं।'' बरगद ने कहा जो आम के बगल में खड़ा था।

''आपकी बात मैं समझ नहीं पाया बरगद दादा। जरा स्पष्ट बताइए कि आपके कहने का आशय क्या है।'' बीनू ने पूछा।

''बीनू तुम्हें यह तो पता होगा ही कि न सिर्फ मनुष्य बल्कि सभी जीवधारियों को जीवित रहने के लिए शुद्ध हवा यानी आक्सीजन की आवश्यकता होती है।''

''हाँ-हाँ, भला इतनी छोटी सी बात कौन नहीं जानता।'' बीनू ने चहक कर उत्तर दिया।

''फिर तो तुम्हें यह भी पता होना चाहिए कि यह आक्सीजन मिलती कहाँ से है?''

''नहीं बरगद दादा। यह बात तो मुझे नहीं पता है।''

"अच्छा तो सुनो हम तुम्हे विस्तार से बताते है कोई भी प्राणी जब साँस लेता है तो अपने अन्दर वायुमंडल से आक्सीजन खींचता है। यह आक्सीजन हृदय में एकत्र रक्त में घुल जाता है और रक्त के प्रवाह के साथ रक्त नलिकाओं के माध्यम से पूरे शरीर में पहुँच जाता है। इस आक्सीजन के द्वारा ही अंगों को ताजगी और काम करने की शक्ति प्राप्त होती है। विभिन्न अंग रक्त में घुले इस आक्सीजन को ले लेते हैं और उसके बदले में दूषित वायु यानी कार्बन डाइ आक्साइड छोड़ देते हैं। यह दूषित वायु रक्त नलिकाओं से होती हुई पुनः वापस हृदय और वहाँ से फेफड़ों तक आती है। जब तुम अन्दर से बाहर की तरफ साँस छोड़ते हो तो यह बाहर निकल आती है। हम पेड़-पौधे इस जहरीली गैस कार्बन डाई आक्साइड को अपने अन्दर सोख लेते हैं और उसे आक्सीजन में बदल देते हैं। यही नहीं कल-कारखानों तथा मोटर, गाड़ी आदि विभिन्न प्रकार के वाहनों द्वारा भी वातावरण में भारी मात्रा में जहरीली गैसें छोड़ी जाती हैं। हम पेड़-पौधे उसे भी सोख लेते हैं। इस प्रकार हम पेड़-पौधों के कारण ही इस वायुमण्डल में प्राण-वायु आक्सीजन तथा कार्बन डाइ आक्साइड आदि जहरीली गैसों के मध्य संतुलन बना रहता है। अगर पेड़ों का कटना इसी प्रकार जारी रहा तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जब वायु मंडल में सिर्फ जहरीली गैसें ही रह जाएंगी और प्राणियों के साँस लेने के लिए शुद्ध हवा भी न मिल सकेगी।"

"हाँ। यह बात तो है बरगद दादा। अगर सचमुच वायुमण्डल से आक्सीजन समाप्त हो गया तब तो जीवन भी असंभव हो जाएगा। लेकिन आपकी एक बात मेरी समझ में नहीं आई। एक तरफ तो आपने बताया कि कार्बन डाइ आक्साइड जहरीली गैस है और दूसरी तरफ यह भी कह रहे हैं कि पेड़-पौधे उस गैस को

अपने अन्दर सोख लेते है तो आखिर पेड़ पौधे इस जहरीली गैस को लेकर करते क्या है?''

''हाँ, यह प्रश्न तुमने अच्छा किया। देखो बीनू। सच्ची बात तो यह है कि कोई भी चीज बेकार अथवा अनुपयोगी नहीं होती। इस सृष्टि के हर एक अवयव का कहीं न कहीं, कोई न कोई उपयोग अवश्य होता है। कार्बन डाइ आक्साइड गैस का उपयोग हम पेड़-पौधे ''प्रकाश संश्लेषण'' के लिए करते हैं।''

''प्रकाश संश्लेषण? यह क्या चीज होती है बरगद दादा?''

''प्रकाश-संश्लेषण हम पेड़-पौधों द्वारा अपना भोजन तैयार करने की प्रक्रिया को कहा जाता है।''

''अरे वाह! क्या पेड़-पौधे भी भोजन बनाते हैं? तो फिर आपका रसोईघर कहाँ है बरगद दादा?'' बीनू ने कहा और हँसने लगा।

''हँसो मत बीनू। मेरी बात को गंभीरता से सुनो। हम पेड़-पौधे भी जीवधारी हैं। हम भी वे सभी क्रियाएं करते हैं जो तुम लोग करते हो। यानी कि खाना, पीना, जगना, सोना, साँस लेना और प्रजनन करना आदि। रही हमारे रसोईघर की बात तो ये हमारी हरी-हरी पत्तियाँ ही हमारी रसोईघर हैं। हमारा भोजन यहीं तैयार होता है।''

''अच्छा तो लगे हाथों यह भी बता दीजिए कि आप लोग अपनी रसोई में भोजन बनाते किस प्रकार से हैं?''

''देखो बीनू। अपना भोजन तैयार करने के लिए हमें कुल चार चीजों की आवश्यकता होती है। 1. क्लोरोफिल 2. कार्बन डाइ आक्साइड 3. पानी और 4. सूरज का प्रकाश। हमारी पत्तियों में जो हरे रंग का पदार्थ होता है उसे ही पर्ण हरित या क्लोरोफिल कहते हैं पानी हम अपनी जड़ों के द्वारा जमीन से सोख लेते हैं। कार्बन

क्साइड गैस वायु मंडल से प्राप्त कर लेते है
में सूर्य का प्रकाश अपने-आप मिल जाता
चीजों के मिलने से हमारा भोजन तैयार हं
ब तो बरसात के मौसम में जब सूरज निकल
म समय के लिए निकलता है तब क्या
न दिनों तो आपको प्रकाश मिल नहीं पाता
आप लोग भूखे ही रह जाते हैं?"
हीं भाई ऐसी बात नहीं है। तुम मनुष्य लोग
ाड़े वक्त के लिए कुछ न कुछ बचा कर
ी प्रकार हम पेड़-पौधे भी अपने बुरे समय
चित करके रखते हैं।"
रगद दादा। तब तो हमें साँस लेने के लि
न दे कर आप लोग सचमुच बहुत महत्वपू

वायें तो हम इतनी अधिक करते हैं बीनू कि

कल्पना भी नही कर सकते सच कहूँ तो हम पेड़ पौधो के बगैर मानव जीवन का अस्तित्व संभव ही नहीं है। अच्छा यह बताओ बीनू कि तुम्हारे घर में दरवाजे, खिड़कियां, कुर्सी, मेज या पलंग, चारपाई आदि वस्तुएं किस चीज से बनी हैं।''

''अरे! यह भी कोई पूछने की बात है? सभी चीजें लकड़ी से बनी हैं। हमारे दादा जी के घर में तो लकड़ी से बनी एक बड़ी सी आलमारी तथा एक बड़ा सा सन्दूक भी है।''

''अब जरा यह सोचो कि तुम लोगों को यह लकड़ी भला मिलती कहाँ से है? तुम लोगों के आराम और उपयोग की ये सारी चीजें हम वृक्षों को काट कर ही तो बनाई जाती हैं न। पिछले हजारों वर्षों से घरों में खाना पकाने के लिए भी लकड़ी का ही उपोग होता आ रहा है। जाड़ों के मौसम में ठण्ड से बचाव के लिए जगह-जगह लकड़ी के अलाव जलाये जाते हैं। और गर्मी से राहत के लिए जिस हाथ पंखे का उपयोग तुम लोग करते हो वह भी लकड़ी का ही बना होता है। मोटे तौर पर यह समझ लो कि आदमी के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक एक भी ऐसा कार्य नहीं है जो लकड़ी के बिना सम्पन्न हो सके।''

''हाँ बरगद दादा। सचमुच लकड़ी का तो हमारे जीवन में कदम-कदम पर उपयोग है। इसके बिना तो हम एक पग भी नहीं चल सकते।''

''अभी तो मैंने सिर्फ लकड़ी के उपयोग की बात बताई है। लेकिन सच्चाई यह है बीनू कि जड़ से लेकर फुनगी तक वृक्षों का एक-एक अंश बहु उपयोगी होता है। पशु हों, पक्षी हों अथवा मनुष्य भोजन के लिए ये सभी प्राणधारी वनस्पतियों पर ही निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त वृक्षों की जड़ों, बीज, छाल तथा पत्तियों से नाना प्रकार की औषधियाँ बनती हैं। विविध प्रकार के रसायन बनते

है यहाँ तक कि वृक्षो के तना से निकला रस भी गोद और रबड़ के रूप में काम आता है।''

''क्या कहा? रबड़, जिससे हम पेंसिल की लिखावट मिटाते हैं वह भी पेड़ से निकलता है?'' बीनू ने चौंक कर पूछा।

''हाँ बीनू। रबड़ की उत्पत्ति पेड़ से ही होती है। वही रबड़ जिससे गेंद और गुब्बारे से लेकर सायकिल, रिक्सा, मोटर, कार और वायुयान तक के पहियों के टायर, ट्यूब आदि बनाये जाते हैं, बच्चों के खिलौने और विविध प्रकार की अन्य उपयोगी चीजें बनाई जाती हैं। वह हम वृक्षों से ही मिलता है। दरअसल रबड़ एक विशेष प्रकार के पेड़ का स्राव होता है। उस पेड़ के तने में चीरा लगा कर वहाँ डिब्बा या कोई अन्य पात्र लटका दिया जाता है। तने के कटे स्थान से निकला स्राव उसी पात्र में एकत्र होता रहता है। बाद में उसी स्राव का शोधन कर के रबड़ तैयार किया जाता है।''

''यह तो आपने एक नई बात बताई बरगद दादा। मैं तो अभी तक यही समझता था कि रबर कोई कृत्रिम पदार्थ है। लेकिन मैंने तो आज तक कहीं रबड़ का पेड़ देखा नहीं। आखिर ये पेड़ मिलते कहाँ हैं।''

''बीनू। विश्व का सबसे बड़ा रबड़ उत्पादक देश मलाया है। अपने देश भारत में सर्वाधिक रबड़ केरल प्रदेश में उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त तमिलनाडु और कर्नाटक में भी रबड़ का उत्पादन होता है।'' बरगद ने बताया।

''क्यों बीनू? अब कुछ समझ में आया कि हम पेड़-पौधे मानव जाति के लिए कितने उपयोगी हैं।' बरगद के बगल में बैठे जामुन ने प्रश्न किया।

''हाँ जामुन दादा। अब मेरी समझ में आ रहा है कि टी० वी० और अखबारों द्वारा वृक्षारोपण के लिए इतने जोर-शोर से प्रचार क्यों किया जाता है। सचमुच इन पेड़-पौधों के बगैर तो हमारा

जीवन ही संभव नहीं है।" बीनू बोला।

"हमें इसी बात का तो दुःख है बीनू कि हम बगैर किसी भेदभाव के बगैर किसी स्वार्थ के मानव जाति की सेवा करते हैं लेकिन मानव हमारी कद्र नहीं करते। वे लोग जब जी में आया हमारे हाथ-पाँव काट लेते हैं, हमारी चमड़ी उतार लेते हैं या हमारी उम्र पूरी होने से पहले ही हमारी हत्या कर देते हैं।" नदी के पीछे की तरफ खड़े आम ने कहा।

"अरे वाह आम जी, आप तो ऐसे बातें कर रहे हैं जैसे कि आप में भी जान हो और काटे जाने पर आपको भी दर्द होता हो।" बीनू ने हँसते हुए कहा।

"तो तुम क्या समझते हो कि हम निर्जीव होते हैं। अरे भाई हम तुम्हारी तरह चल, फिर नहीं सकते तो क्या इसका यह मतलब हुआ कि हमारे में जान ही नहीं होती।" आम बोला।

"यही तो तुम लोगों की भूल है बीनू। अधिकांश लोग यही समझते हैं कि हम पेड़-पौधे निर्जीव होते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हम पेड़-पौधों में भी जीवन होता है। अभी थोड़ी देर पहले बरगद भाई ने भी तो बताया था कि पेड़-पौधे भी वे सभी क्रियायें करते हैं जो अन्य प्राणी किया करते हैं।" आम के चुप होते ही पीपल ने कहा।

तभी आम पुनः बोल पड़ा—"और सबसे मजे की बात तो यह है बीनू कि इस तथ्य की खोज सर्वप्रथम अपने ही देश के वैज्ञानिक डॉ० जगदीश चन्द्र बोस ने की थी। डॉ० बोस ने अपने प्रयोगों द्वारा यह प्रमाणित कर दिया है कि पेड़-पौधे भी अन्य जीवधारियों की तँरह ही जन्म लेते हैं, मरते हैं, खाते हैं, पीते हैं, जागते हैं, सोते हैं, खुश होते हैं, उदास होते हैं, साँस लेते हैं और प्रजनन भी करते हैं।"

'सिर्फ इतना ही नही बीनू अब तो यह बात भी प्रमाणित हो चुकी है कि पेड़-पौधे संगीत के प्रति भी संवेदनशील होते हैं। अपने ही देश के अन्नामलाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक टी0 सी0 एन0 सिंह ने इस विषय पर उल्लेखनीय शोध किए हैं। उन्होंने लगातार एक महीने कुछ पौधों के सामने रोज पच्चीस मिनट तक वीणा वादन की व्यवस्था की। एक महीने के बाद देखा गया कि जो पौधे वीणावादन का आनन्द उठाते रहे वे अन्य पौधों की अपेक्षा बेहतर ढंग से बढ़े हैं। यही नहीं संगीत के प्रभाव से पौधों की पैदावार भी चमत्कारिक ढंग से बढ़ जाती है। अमेरिकी वैज्ञानिक जार्ज स्मिथ ने भी अपने प्रयोगों से साबित कर दिया है कि संगीत से प्रभावित पौधों के तने मजबूत, अधिक मोटे और हरे हो जाते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी साबित कर दिया है कि पौधे मधुर संगीत में रुचि लेते हैं तथा कानफोड़ू तेज संगीत से उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। आज फोटो सानिक्स के नाम से विज्ञान की एक शाखा का ही उदय हो चुका है जिसमें पौधों पर ध्वनि के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। न्यूयार्क के वैज्ञानिक बैक्सटर का तो यह दावा है कि पेड़-पौधे दूसरों के मन की भाषा और भावनायें भी समझ जाते हैं। पेड़-पौधों की ज्ञानेन्द्रियां मनुष्य की पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से कही अधिक सूक्ष्म और पैनी होती हैं।'' बरगद ने कहा।

''बरगद दादा, आप सचमुच बहुत उपयोग की बातें बता रहे हैं। मुझको तो आपकी बातें सुनने में बहुत मजा आ रहा है। कृपया कुछ और बताइए कि पेड़-पौधे मानव जाति की किस-किस प्रकारसे क्या-क्या सेवायें करते हैं।'' बीनू ने कहा।

''हमारे उपयोग और सेवाओं की बातें तो इतनी हैं बीनू कि यदि मैं बताने लगूँ तो सुबह से शाम हो जाय, शाम से रात हो जाय लेकिन बातें न खत्म हों। अगर सचमुच तुम सुनने के लिए

उत्सुक हो तो लो सुनो कुछ मुख्य-मुख्य बातें मैं संक्षेप में बताता हूँ। पृथ्वी के तापमान और मौसम के नियंत्रण में हम पेड़-पौधों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि स्वस्थ पर्यावरण के लिए कम से कम तैंतीस प्रतिशत भू-भाग पर वन अवश्य होने चाहिए। लेकिन तुम लोग पैसों की लालच में वनों की अंधाधुंध कटाई किये जा रहे हो। जिसका परिणाम यह है कि आज भारत में नौ प्रतिशत से भी कम क्षेत्रफल में वन शेष रह गये हैं। अनुमानतः भारत में प्रति वर्ष लगभग पचास हजार हेक्टेयर भू क्षेत्र से वनों का सफाया हो जाता है। वनों के इस बेहिसाब कटाई के फलस्वरूप पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ता जा रहा है और वायुमंडल में कार्बन डाइ आक्साइड गैस की मात्रा तेजी से बढ़ती जा रही है। वैज्ञानिकों का आकलन है कि पिछले सौ वर्षों में वायुमंडल से लगभग तीस लाख टन प्राणवायु आक्सीजन समाप्त हो चुकी है। दूसरी तरफ वायुमंडल में लगभग 42 लाख टन कार्बन डाइ आक्साइड गैस बढ़ गई है।'' बरगद ने बताया।

''वायुमंडल में कार्बन डाइ आक्साइड के बढ़ने से पृथ्वी के तापमान का क्या सम्बन्ध है। बरगद दादा?''

''बात ऐसी है बीनू कि हमारे वायुमंडल में आयतन की दृष्टि से 0.032 प्रतिशत कार्बन डाइ आक्साइड और 21 प्रतिशत आक्सीजन विद्यमान है। कार्बन डाइ आक्साइड की यह छोटी मात्रा ही पृथ्वी का तापमान निर्धारित एवं नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वायुमंडल की कार्बन डाइ आक्साइड गैस सूर्य की गरमी को अपने से छन कर पृथ्वी पर आने देती है लेकिन जब यह गर्मी पृथ्वी से परावर्तित होकर आकाश की ओर लौटने लगती है तो यह गैस उसके कुछ भाग को पृथ्वी पर ही रोक लेती है। कार्बन डाइ आक्साइड गैस इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी के तापमान

को 15 डिग्री से के आसपास बनाए रखती है जो पृथ्वी पर जीवन के अनुकूल है। वायुमंडल में कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा के बढ़ने का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि पृथ्वी पर इसके द्वारा रोकी जाने वाली गर्मी भी बढ़ती जा रही है।"

"आपने बताया कि पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है तो इससे क्या नुकसान हो सकता है बरगद दादा।" बीनू ने पुनः प्रश्न किया।

"देखो बीनू, पिछले पन्द्रह हजार वर्षों में पृथ्वी के औसत तापमान में 3.6 से0 की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान इस समय .5 डिग्री से0 प्रति दशक की दर से बढ़ रहा है। और यह दर दिन-प्रतिदिन और भी अधिक होती जा रही है। सन् 2030 तक पृथ्वी के तापमान में 4 डिग्री से0 तक वृद्धि की संभावना है। उसके बाद तापमान वृद्धि की दर विस्फोटक रूप ले लेगी। तथा सन् 2070 तक पृथ्वी के तापमान में 9 डिग्री से0 तक की वृद्धि हो जाएगी।

जहाँ तक नुकसान की बात है तो पृथ्वी के तापमान में वृद्धि से हजारों प्रकार की वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। पृथ्वी पर ग्रीष्म ऋतु की अवधि लम्बी हो जाएगी। पृथ्वी के जल स्रोतों में भारी कमी आ जाएगी और खेतीबाड़ी पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। इतना ही नहीं पृथ्वी का तापमान बढ़ने से ध्रुवीय प्रदेशों की बर्फ एवं हिमखण्ड पिघलने प्रारम्भ हो जाएंगे। परिणामस्वरूप समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा। समुद्र के जल स्तर में होने वाली इस वृद्धि से समुद्र के किनारे का क्षेत्र तथा बहुत से देश जैसे लंका, मालदीव, मारीशस और बांगलादेश आदि सदा के लिए जलमग्न हो जायेंगे। ये सब बातें सिर्फ कल्पना नहीं है बल्कि सामने भी आने लगी हैं। ध्रुवीय प्रदेशों

की बर्फ में तेजी से गलन हो रहा है। आर्कटिक का बर्फीला समुद्र प्रति वर्ष 34300 किलोमीटर कम होता जा रहा है। यही नहीं आर्कटिक सागर की बर्फ की मोटाई में भी कमी आई है। नब्बे के दशक के मध्य में इसकी मोटाई 3.1 मीटर थी जो घट कर अब सिर्फ 1.8 मीटर रह गई है।''

"अरे बाप रे! पेड़ों के कटने का इतना भयंकर दुष्परिणाम हो सकता है यह तो मैंने सोचा भी नहीं था।'' बीनू बोला।

"बस इतनी बातें सुनकर ही बाप-बाप करने लगे।'' बरगद दादा ने हँसते हुए कहा—"बीनू यदि तुम्हारी मानव जाति नहीं सँभली और इसी प्रकार मनमानी करती रही तो एक दिन वह समय भी आएगा जब इस पृथ्वी से जीवधारियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा और महाप्रलय की स्थिति आ जाएगी।''

"क्या सचमुच बरगद दादा?'' बीनू ने आश्चर्य से पूछा।

"और नहीं तो क्या? वायुमंडल में कार्बन डाइ आक्साइड और कार्बन मोनो आक्साइड जैसी जहरीली गैसों की मात्रा जिस तेजी से बढ़ रही है उसे देख कर तो यही लगता है कि एक दिन यह सारी सृष्टि इनके चपेट में आ जाएगी।''

"लेकिन अभी तो आप बता रहे थे कि पेड़-पौधे वायुमंडल की कार्बन डाइ आक्साइड गैस को सोख लेते हैं और उसके बदले आक्सीजन उत्सर्जित करते हैं, तो फिर कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा बढ़ क्यों रही है?'' बीनू ने प्रश्न किया।

"हाँ भाई। मैंने झूठ नहीं कहा है। यह बात पूरी तरह सत्य है कि हम वायुमंडल से कार्बन डाइ आक्साइड गैस सोख लेते हैं। लेकिन इस जहरीली गैस को सोखने की हमारी भी एक निश्चित क्षमता है। हम उससे अधिक कार्बन डाइ आक्साइड नहीं सोख पाते हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि दुनिया भर के कारखानों,

बिजलीघरो और मोटर गाड़ी आदि वाहनो से निकलने वाले धुएँ के कारण प्रति वर्ष छः अरब टन से भी अधिक कार्बन इस वातावरण में फैल जाता है। इसका एक तिहाई हिस्सा तो दुनिया के जंगल सोख लेते हैं लेकिन शेष दो तिहाई से भी अधिक कार्बन पर्यावरण तथा मानव को रोगी बनाने के लिए वातावरण में ही रह जाता है। इस प्रकार साल दर साल वातावरण में कार्बन की मात्रा बढ़ती जा रही है। इस बढ़ते कार्बन का ही दुष्परिणाम है कि तरह-तरह की नई-नई जानलेवा बीमारियां फैल रही हैं।" बरगद ने बताया।

"यह तो आपने एक नई बात बताई बरगद दादा।"

"हाँ। अभी कुछ साल पहले तक खुद वैज्ञानिकों को भी पेड़ों के कार्बन सोखने की क्षमता की जानकारी नहीं थी और पूरा विश्व पेड़ों को कार्बन नियंत्रण की रामबाण दवा मान रहा था। लेकिन इंटर गवर्नमेंट पैनल आन क्लाइमेट चेंज (आई० पी० सी० सी०) ने 1996 में अपनी रिपोर्ट में यह सनसनीखेज जानकारी दी कि वातावरण में कार्बन की अधिकता के कारण पेड़ों की कार्बन सोखने की क्षमता चुक रही है। पेड़ एक निश्चित सीमा तक ही कार्बन सोख पायेंगे। इस सीमा के बाद पेड़ कार्बन को वापस पर्यावरण में छोड़ना शुरू कर देंगे। आई० पी० सी० सी० के वैज्ञानिक कोक्स का मानना है कि सन् 2050 ई० तक जंगल सोखे गये कार्बन की बड़ी मात्रा में उगलना शुरू कर देंगे।"

"बरगद दादा। यदि सचमुच ऐसा है। यदि सचमुच वातावरण में कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है तब तो विनाश निश्चित ही है।"

"सिर्फ कार्बन ही नहीं बीनू। कुछ अन्य जहरीली गैसें भी हैं जो वातावरण में बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। जैसे नाइट्रस आक्साइड, मीथेन तथा रेफ्रिजरेटर और एयर कंडीशनर से निकलने

वाली क्लोरो फ्लोरो कार्बन आदि इन तमाम हानिकारक गैसो के बढ़ने का परिणाम यह होगा कि ओजोन की परत नष्ट हो जाएगी और यदि ओजोन की परत फट गई तो समझो इस पृथ्वी पर तबाही आनी ही आनी है।''

''यह ओजोन की परत क्या चीज होती है बरगद दादा। यह नाम तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ। और यह ओजोन की परत होती कहाँ है जो जहरीली गैसों से इसके फटने या नष्ट होने का खतरा है।'' बीनू ने पुनः प्रश्न किया।

''तुम तो अजीब किस्म के लड़के हो भाई। कोई दूसरा लड़का होता तो मेरा भाषण और विज्ञान की ये रूखी-सूखी बातें सुन कर भाग खड़ा होता। लेकिन तुम तो प्रश्न पूछ-पूछ कर बात को और भी अधिक बढ़ाते चले जा रहे हो।'' बरगद ने हँसते हुए कहा।

''हाँ बरगद दादा। आपकी बातें मुझे बहुत रोचक लग रही हैं। फिर आप तो बहुत ही ज्ञान और उपयोग की बातें बता रहे हैं। इससे तो हमारा सामान्य ज्ञान बढ़ेगा। चलिए, कृपया मुझे विस्तार से बताइए कि यह ओजोन की परत क्या चीज होती है और पृथ्वी से इसका क्या सम्बन्ध है।''

''यदि तुम सुनना ही चाहते हो तो लो सुनो। सर्वप्रथम तो यह जान लो कि यह सूरज धधकते हुए आग का एक विशाल गोला है। इस सूरज की आँच इतनी तेज है और इसकी कुछ किरणें इतनी अधिक हानिकारक हैं कि यदि सूरज की रोशनी पृथ्वी पर सीधे पड़ने लगे तो हम सभी जीवधारी जल कर भस्म हो जाएं।''

''तो फिर हम सब लोग जीवित कैसे हैं। सभी कुछ जल क्यों नहीं जाता?''

''उतावले न बनो भाई। पहले मेरी पूरी बात तो सुनो। यही तो मैं बताने जा रहा हूँ कि इस प्रकृति ने हमारी सुरक्षा का बहुत

स्थित प्रबन्ध कर रखा है। हमारी पृथ्वी की स
बाइस किमी० की ऊँचाई पर किसी तम्बू या
प्राकृतिक गैस आक्सीजन की एक छतरी
ीजन के तीन परमाणुओं से बनी इस छतरी व
है। ओजोन की यह छतरी हमारे लिए सुरक्षा
है। ऊपर से आने वाली हानिकारक किरणों व
लेती है। पृथ्वी पर बढ़ते प्रदूषण और वायुमं
की लगातार बढ़ती मात्रा के कारण ओजोन
ार कमजोर हो रही है। वैज्ञानिकों का कहन
छोटे छेद भी हो गये हैं। ओजोन की छतरी वे
निकारक पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर आने लगी
प्रभाव से न सिर्फ मनुष्य बल्कि पशु-पक्षी और
माम तरह के खतरनाक रोग पैदा हो रहे हैं। य
ात्रा एक सीमा से अधिक बढ़ गई तो तमाम

का प्रयोग कर रहे हैं। कृपया यह तो बताइए कि प्रदूषण का मतलब क्या होता है।"

"देखो बीनू। प्रदूषण का सीधा-सादा शाब्दिक अर्थ होता है गन्दगी। लेकिन हम जिस प्रदूषण की बात कर रहे हैं उसका सम्बन्ध वातावरण की गन्दगी से है। दरअसल हमारे वातावरण में जैविक तथा अजैविक दो प्रकार के तत्व होते हैं। जैविक तत्वों के अन्तर्गत पेड़-पौधे, मनुष्य तथा जीव-जन्तु आते हैं और अजैविक तत्वों के अन्तर्गत वायु, जल, मिट्टी आदि पदार्थ। स्वच्छ तथा स्वस्थ वातावरण के लिए इन दोनों तत्वों को समान यानी संतुलित अवस्था में रहना आवश्यक है। इनमें से किसी भी एक की कमी या अधिकता पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ देती है। इसी असंतुलन को प्रदूषण कहते हैं।"

"अब मैं समझ गया बरगद दादा। वातावरण में जहरीली गैसों के बढ़ने से जो असंतुलन हो रहा है उसी से प्रदूषण फैल रहा है, क्यों? यही बात है न।" बीनू ने चहकते हुए कहा।

"हाँ बीनू। तुम्हारी बात भी सही है। लेकिन यह तो सिर्फ प्रदूषण का एक प्रकार है। सच बात तो यह है कि हमारे वातावरण में कई प्रकार का प्रदूषण फैल रहा है।"

"कई प्रकार का प्रदूषण? भला वह किस प्रकार बरगद दादा? जरा विस्तार में बताइए।"

"अध्ययन की सुविधा के लिए वैज्ञानिकों ने प्रदूषण को मुख्यतया चार भागों में बांटा है—1. वायु-प्रदूषण, 2. जल-प्रदूषण, 3. ध्वनि-प्रदूषण तथा 4. मृदा-प्रदूषण। अब मैं संक्षेप में तुम्हें इन चारों प्रकार के प्रदूषणों के विषय में बताता हूँ।"

वायु-प्रदूषण—वायु-प्रदूषण मुख्यतया कल-कारखानों से निकलने वाली, जहरीली गैसों, हाइड्रोकार्बन, राख तथा हैलोजन

पदार्थों के हवा मे विसर्जित होने से होता है कारखानो की चिमनियाँ भारी मात्रा में कार्बन डाइ आक्साइड, व कार्बन मोनो आक्साइड आदि जहरीली गैसें तथा अन्य घातक धातुओं के छोटे-छोटे कण वायुमंडल में उगलती हैं। इनके अतिरिक्त ट्रक, ट्रैक्टर बस, मोटर, स्कूटर आदि सभी प्रकार के वाहनों से भी यही जहरीली गैसें निकलती हैं। इन सबसे वायु-प्रदूषण फैलता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार वायु-प्रदूषण के कुप्रभावों से प्रति वर्ष इस संसार में कम से कम बीस लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है।

सन् 1984 में हुई भोपाल गैस त्रासदी वायु-प्रदूषण का एक जीता-जागता प्रमाण है, जिसमें भोपाल शहर स्थित "यूनियन कार्बाइड" नामक फैक्ट्री से "मिथाइल आइसोसायनाइड" नामक जहरीली गैस रिसने से उस क्षेत्र की हवा प्रदूषित हो गयी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि तीस हजार से भी अधिक लोग अपनी जान गँवा बैठे तथा अनगिनत पशु, पक्षी मारे गये।

वायु-प्रदूषण का कुप्रभाव सिर्फ मनुष्य पर ही नहीं बल्कि जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों और ऐतिहासिक स्मारकों पर भी पड़ रहा है। इसके कारण पेड़-पौधों की वृद्धि में रुकावट आने लगी है तथा ऐतिहासिक इमारतें कमजोर पड़ने लगी हैं। अभी तक यह धारणा थी कि वर्षा का पानी शुद्ध होता है किन्तु वायु-प्रदूषण के कारण यह बात भी गलत सिद्ध हो गई है। वायुमंडल में नाइट्रस आक्साइड, ओजोन व हाइड्रो कार्बन जैसी जहरीली गैसों की बढ़ती मात्रा से अम्ल वर्षा की स्थिति उत्पन्न हो गई है। वायुमंडल में स्थित ये गैसें वर्षा के जल से प्रतिक्रिया कर के अम्ल का निर्माण करती हैं। परिणाम स्वरूप वर्षा का पानी अम्लीय हो जाता है। यह अम्लीय जल वनस्पतियों तथा जलीय जीवों को नुकसान पहुँचाने के साथ-साथ पीने के पानी को भी प्रदूषित करता है।" इतना कहने के बाद

बरगद दादा पल भर के लिए रुके फिर बोले—"क्यों भई बीनू जी। तुम मेरी बातों से बोर तो नहीं हो रहे हो?"

"अरे नहीं बरगद दादा। बिल्कुल भी नहीं। बल्कि मुझे तो बहुत अच्छा लग रहा है। आप अपनी बात जारी रखिए प्लीज।" बीनू ने जवाब दिया।

"अगर तुम्हें अच्छा लग रहा है तो लो सुनो। वायु-प्रदूषण के बाद नम्बर आता है **जल-प्रदूषण** का। लेकिन जल-प्रदूषण के विषय में बताने से पूर्व मैं कुछ बातें तुम्हें जल के महत्व के बारे में बताना चाहूँगा। हिन्दी में पानी का एक पर्यायवाची शब्द जीवन है। अर्थात् पानी को जीवन कहा गया है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि रहीम दास ने भी लिखा है—"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।" सचमुच पानी हम प्राणधारियों के लिए एक अनिवार्य चीज है। इसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं कि जा सकती। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सौर मंडल में पृथ्वी सहित कुल नौ ग्रह हैं जिनमें सिर्फ पृथ्वी पर ही पानी है। इसलिए सिर्फ पृथ्वी पर ही जीवन है।

वैसे तो पृथ्वी के क्षेत्रफल का लगभग 70.8 प्रतिशत भाग पानी है। लेकिन इस उपलब्ध पानी का 97.3 प्रतिशत भाग समुद्र का खारा जल है जो अनुपयोगी है। पृथ्वी पर उपलब्ध सम्पूर्ण जलराशि का केवल 2.7 प्रतिशत भाग ही मनुष्य के पीने लायक है और चिन्ता की बात यह है कि जल-प्रदूषण के कारण शुद्ध जल की मात्रा में दिनों दिन कमी आती जा रही है। आज दुनिया की सम्पूर्ण आबादी को शुद्ध जल उपलब्ध कराना एक कठिन समस्या हो गई है। अनुमान है कि सन् 2025 ई० तक पूरी धरती की जनसंख्या 8.5 अरब हो जाएगी और तब शुद्ध पानी पेट्रोल की तरह कीमती चीज हो जाएगी।

अब तुम्हे बताते है कि जल प्रदूषित कैसे होता है जल-प्रदूषण मुख्यतया कल-कारखानों से निकले विषैले रसायनों, कृषि कार्य में उपयोग किए जाने वाले कीट-नाशक पदार्थों, मनुष्य द्वारा विसर्जित मल-मूत्र एवं घरों से निकलने वाले कचरों के कारण होता है। तुम्हारे हिन्दू धर्म में गंगा के पानी को अमृत कहा गया है लेकिन आज स्थिति यह है कि गंगा नदी के किनारे स्थित पन्द्रह सौ औद्योगिक इकाइयों का जहरीला पानी इसमें गिरता है। इसके किनारे बसे लगभग एक हजार छोटे, बड़े शहरों की गंदगी इस नदी में उड़ेली जा रही है। परिणामस्वरूप गंगा नदी का तीन चौथाई पानी प्रदूषित हो चुका है। यमुना नदी का पानी तो अब जानवरों के पीने लायक भी नही रह गया है।

फसलों की पैदावार बढ़ाने तथा उन्हें रोगों से बचाने के लिए तरह-तरह की खादों एवं कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किया जाता है। ये खाद तथा कीटनाशक वर्षा के जल के साथ बह कर नदियों और तालाबों में मिल जाते हैं तथा जल के अन्दर रहने वाले एवं इस जल को पीने वाले जीवधारियों के लिए मौत का कारण बनते हैं।

"आप ठीक कह रहे हैं बरगद दादा। जल-प्रदूषण के विषय में तो कई बार अखबारों में भी छप चुका है लेकिन यह मृदा-प्रदूषण क्या होता है। मैं नहीं समझ पाया।" बरगद के चुप होते ही बीनू ने पुनः कुरेदा।

"मृदा का अर्थ होता है मिट्टी। आज न सिर्फ जल और वायु बल्कि मिट्टी भी प्रदूषित हो चुकी है। **मृदा-प्रदूषण** मुख्यतया कृषि कार्य में प्रयुक्त रासायनिक खादों एवं कीट नाशक दवाओं के कारण होता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रति वर्ष करीब साढ़े सात करोड़ लोग कीटनाशक दवाओं की चपेट में आ जाते हैं।

विगत कुछ वर्षों में खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों और कीट नाशक दवाओं का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। ये रासायनिक पदार्थ भूमि में प्रवेश करके मिट्टी को प्रदूषित कर देते हैं। प्रदूषित मिट्टी में उगे खाद्यान्न भी इनसे प्रदूषित हो जाते हैं और भोजन के साथ प्राणियों के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इस मृदा-प्रदूषण के कारण न सिर्फ अनाज बल्कि सब्जियाँ, फल, मेवे, दूध, दही तथा अंडा व माँस, मछली आदि सभी भोज्य पदार्थ प्रदूषित हो चुके हैं।"

"और **ध्वनि-प्रदूषण** किसे कहते हैं बरगद दादा? इसका मतलब कहीं शोर-गुल तो नहीं।"

"हाँ बीनू। बिल्कुल ठीक समझा तुमने। ध्वनि-प्रदूषण का अर्थ है शोर-शराबे से होने वाला प्रदूषण। आज हमारे चारों तरफ शोर ही शोर है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि शोर एक अदृश्य प्रदूषण है जो प्राणियों के स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालता है। शोर का घातक प्रभाव न सिर्फ जीव-जन्तुओं पर बल्कि निर्जीव पदार्थों पर भी पड़ता है।

शोर के कारण मनुष्य के कान के पर्दे फट जाते हैं, धमनियाँ सिकुड़ जाती हैं, हृदय धीमी गति से काम करने लगता है और गुर्दे खराब हो जाते हैं। शोर दिमाग के तंतुओं को कमजोर बना देता है तथा इसके कारण दिल का दौरा पड़ने की आशंका बढ़ जाती है। शोर के कारण अल्सर, सिर दर्द, पेट की खराबी तथा अनिद्रा जैसी बीमारियां भी हो जाती हैं।"

"प्रदूषण तो वास्तव में बहुत नुकसानदायक चीज है बरगद दादा। लेकिन यह भी तो बताइए कि इसे दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।" बीनू बोला।

"देखो बीनू। प्रदूषण इतना बढ़ चुका है कि इसे पूरी तरह

समाप्त कर पाना तो संभव ही नहीं है। हाँ इसे नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है। मैं औरों के बारे में नहीं, सिर्फ अपने विषय में बता सकता हूँ कि हम पेड़ इस प्रदूषण नियंत्रण में क्या भूमिका निभा सकते हैं।''

''ठीक है। चलिए वही बताइए।''

''वायु-प्रदूषण के विषय में तो मैं पहले ही बता चुका हूँ कि हम वृक्ष वातावरण की जहरीली गैसों को सोखकर उन्हें आक्सीजन में बदल देते हैं और इस प्रकार वायु-प्रदूषण को नियंत्रित करते हैं। ध्वनि-प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी हमारी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ताड़, इमली, नारियल, आम, जामुन आदि लम्बे व घने वृक्ष ध्वनि को शोषित करते हैं। वैज्ञानिको का मानना है कि वृक्षों के द्वारा वातावरण के शोर को दस प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। अतः रेल की पटरियों के किनारे, सड़कों के दोनों तरफ, तथा कल-कारखानों और कार्यालयों के आसपास अधिकाधिक संख्या में घने, छाएदार वृक्ष लगाए जाने चाहिए।''

''और जल-प्रदूषण के नियंत्रण में आप वृक्षों की क्या भूमिका होती है बरगद दादा।''

''देखो भई! जल-प्रदूषण के नियंत्रण में हम वृक्ष भले ही कोई प्रत्यक्ष भूमिका न निभाते हों लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से इसमें सहायक तो होते ही हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि पृथ्वी पर जल बरसाने के लिए हम सीधे जिम्मेदार हैं।''

''जल बरसाने के लिए आप जिम्मेदार हैं? भला वो कैसे बरगद दादा? वर्षा तो बादलों के कारण होती है।''

''हाँ। यह सच है कि वर्षा बादलों से होती है लेकिन आसमान में इधर-उधर बिखरे बादलो को एकत्र करने और उन्हें बरसने के लिए विवश करने का काम कौन करता है? शायद तुम्हें

नहीं पता है कि मानसून के बादलों को आकर्षित करने तथा उन्हे बरसाने का कार्य वृक्ष ही करते हैं। यही कारण है कि जहाँ पेड़-पौधों की संख्या अधिक होती है वहाँ समय से मानसून आता है और अच्छी वर्षा होती है। अच्छी वर्षा होने से खेती की पैदावार अच्छी होती है और मौसम भी सुहावना रहता है। दूसरी तरफ जहाँ पेड़-पौधों की संख्या कम होती है वहाँ वर्षा भी बहुत कम होती है। वर्षा कम होने से सूखा पड़ जाता है, फसलों की पैदावार अच्छी नहीं होती और लू तथा भयंकर गर्मी के कारण विभिन्न प्रकार के रोग भी जन्म लेते हैं। उदाहरण के लिए तुम अपने ही देश में देख लो पहाड़ी क्षेत्रों विशेष रूप से असम व मेघालय राज्यों में जहाँ घने जंगल हैं वहाँ अधिकतम वर्षा होती है और चारों तरफ हरियाली रहती है। जबकि राजस्थान में जहाँ पेड़-पौधों की संख्या बहुत कम है वहाँ वर्षा ही नहीं होती। खेतों की सिंचाई तो दूर लोगों को पीने तक के लिए भरपूर पानी नहीं मिल पाता है।''

''लेकिन राजस्थान का अधिकांश क्षेत्र तो रेगिस्तान है। फिर वहाँ पेड़-पौधे भला कैसे उग सकते हैं।'' बीनू ने बीच में ही टोका।

''तुम्हारी बात भी अपनी जगह सच है। लेकिन क्या कभी तुमने यह सोचा है कि यह क्षेत्र रेगिस्तान क्यों बन गया? जानते हो। इसका भी कारण है वनों का विनाश। किसी समय यह रेगिस्तान भी हरा-भरा रहा होगा जो पेड़ों के कटने के कारण मरुस्थल में बदल गया।''

''क्या सचमुच?'' बीनू चौंका।

''और नहीं तो क्या? वनों के विनाश के कारण वर्षा प्रभावित होती है और वर्षा न होने से पृथ्वी के अन्दर के जल स्रोत सूख जाते हैं। परिणामस्वरूप धरती मरुस्थल में बदल जाती है। वनों के विनाश की यह समस्या सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में है।

। है कि वन-विनाश के कारण प्रति वर्ष एक व
एकड़ जमीन मरुस्थल में बदल जाती है। अके
14 प्रतिशत भू-भाग अब तक रेगिस्तान में ब
कलन के अनुसार पूरी दुनिया में बाइस हेक्टेय
से वनों का विनाश हो रहा है। अकेले भारत
48 हजार हेक्टेयर भू-क्षेत्र से जंगलों का सफ

'इसका मतलब तो यह हुआ कि यदि इसी प्र
जारी रहा तो भविष्य में कभी पानी के लिए
एगी।''
'तुमने बिल्कुल सही कहा बीनू। वनों के कट
तेदिन वर्षा की मात्रा कम होती जा रही है
र जल की मात्रा भी कम होती जा रही है।
जल की उपलब्धता 1955 में 5300 घन मीटर
2000 घन मीटर रह गयी है। सन् 2025 त

घन मीटर रह जाएगी। जबकि प्रति व्यक्ति जल की न्यूनतम उपलब्धता 1700 घन मी0 होनी चाहिए। जहाँ एक तरफ दिन-प्रतिदिन आबादी बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी तरफ जल की मात्रा घटती जा रही है। अतः भविष्य में जल के लिए मार-काट मचना अवश्यम्भावी है। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि अगर कभी तीसरा विश्व-युद्ध हुआ तो वह पानी के लिए ही होगा।"

"बरगद दादा। आपने तो मेरी आँखें खोल दीं। मैं तो पेड़-पौधों को बस यूँ ही फालतू की चीजें समझता था। लेकिन अब समझ में आया कि आप लोग मानव जाति की अमूल्य सेवा करते हैं।"

"हाँ बीनू। सच्चाई यही है कि हमारी सेवाओं की कीमत नहीं आँकी जा सकती। फिर भी कुछ लोगों ने इस दिशा में प्रयास किया है और उनका यह निष्कर्ष है कि एक सामान्य वृक्ष अपने पचास वर्ष की औसत उम्र में अप्रत्यक्ष रूप से कम से कम 35 लाख रुपये मूल्य का लाभ प्रदान करता है।"

"पैंतीस लाख रुपये मूल्य की सेवा? भला वह कैसे बरगद दादा?" बीनू ने आश्चर्य से पूछा।

"वैज्ञानिकों और अर्थशास्त्रियों का आकलन है कि एक पचास वर्षीय वृक्ष द्वारा अपने जीवन काल में उत्पादित कुल आक्सीजन का मूल्य लगभग 6 लाख, वायु के परिष्करण का मूल्य लगभग 11 लाख, जल के अवशोषण एवं आर्द्रता नियंत्रण का मूल्य लगभग 6.50 लाख, मिट्टी के परिरक्षणका मूल्य 5.50 लाख, पशु-पक्षियों के संरक्षण का मूल्य 5.50 लाख, तथा प्रोटीन के रूपांतरण का मूल्य 0.50 लाख है। अभी इसमें वृक्ष द्वारा दी जाने वाली छाया, हरियाली, ईंधन, प्रकोष्ठ, फल, फूल तथा छाल, पत्तों और जड़ों के औषधीय उपयोग का मूल्य नहीं शामिल है।"

'अरे बाप रे पैंतीस लाख रुपये मूल्य की सेवा सिर्फ एक पेड़ से?''

"हाँ बीनू। सिर्फ एक पेड़ से। वह भी मात्र पचास वर्ष की आयु में। जब कि अधिकांश पेड़ ऐसे हैं जो सौ, डेढ़ सौ साल या इससे भी अधिक समय तक ऐसी सेवा करते हैं। तुम लोगों के पूर्वज कोई मूर्ख थोड़े थे जो वे लोग पेड़ों को देवता मानते थे और उनकी पूजा किया करते थे और एक तुम लोग हो जो थोड़े से पैसों की लालच में अंधाधुंध पेड़ों की कटाई किये जा रहे हो। आज के मनुष्य की स्थिति उस लालची बुढ़िया जैसी है जिसने लालचवश सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी का पेट ही फाड़ डाला था।''

"बरगद दादा। आपकी बात तो सच है कि विकास और शहरीकरण के कारण आज बहुत अधिक संख्या में पेड़ काटे जा रहे हैं। लेकिन उनके स्थान पर नये-नये पेड़ भी तो लगये जा रहे हैं। सरकार बकायदे अभियान चला कर वृक्षारोपण करा रही है। यही देखिए। यदि आप लोगों को काटा गया है तो बदले में पन्द्रह-बीस नये पेड़ लगाये भी तो गये हैं।'' बीनू ने नदी के किनारे-किनारे एक लाइन से लगाए गये यूकैलिप्टस के पेड़ों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"हाँ बीनू। हम छायादार और फलदार पेड़ों को इसी बात का तो अफसोस है कि स्वार्थ में अंधा मनुष्य अब अच्छे और बुरे की पहचान भी भूल गया है।''

"अच्छे और बुरे की पहचान? मैं आपकी बात समझ नहीं पाया बरगद दादा।''

"अच्छा यह बताओ कि क्या तुम्हारे समाज में सभी लोग एक जैसे ही होते हैं? क्या एक सज्जन और एक दुर्जन, अथवा एक साधु और एक शैतान के बीच कोई फर्क नहीं होता.....?'' बरगद

ने प्रश्न किया

"हाँ...हाँ होता क्यो नही.....बहुत अन्तर होता है। सच्चे और सज्जन का हर कोई सम्मान करता है और दुष्टों से हर कोई घृणा करता है लेकिन आप अपने सम्बन्ध में यह बात क्यों कह रहे हैं। आप तो वृक्ष हैं और सभी वृक्ष एक समान होते हैं। सभी लकड़ी देते हैं, फल देते हैं और अपनी क्षमता के अनुसार छाया भी देते हैं।" बीनू ने उत्तर दिया।

बीनू की बात सुन कर बरगद खूब जोर से हँसा और फिर बोला—"नहीं बीनू नहीं। मनुष्यों की तरह ही वृक्षों की भी श्रेणी होती है। कुछ वृक्ष अधिक लाभदायक होते हैं तो कुछ कम। और बहुत से वृक्ष तो लाभ से अधिक हानि पहुँचाने वाले होते हैं। शायद तुमने यह कविता सुनी हो—

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।"

"हाँ बरगद दादा। रहीम दास का यह दोहा तो मेरी हिन्दी की पुस्तक में भी है। लेकिन आप पहेली न बुझाइए। प्लीज साफ-साफ बताइए कि आप कहना क्या चाहते हैं।"

"देखो बीनू। तुमने तो बहुत आसानी से कह दिया कि सभी पेड़ लकड़ी देते हैं। फल देते हैं और छाया देते हैं इसलिए सभी पेड़ एक जैसे होते हैं। लेकिन ऐसी बात नहीं है। कुछ पेड़ जैसे आम, महुआ, जामुन, गूलर, बड़, पीपल तथा नीम आदि अधिक उपयोगी होते हैं यानी कि अधिक छाया, अधिक लकड़ी तथा अधिक मात्रा में फल देते हैं अधिक समय तक सेवा करते हैं तथा विशाल होने के कारण ऐसे पेड़ों में कार्बन सोखने की क्षमता भी अधिक होती है। कुछ मध्यम श्रेणी के पेड़ अपेक्षाकृत कम उपयोगी होते हैं जैसे बाँस, बबूल, ताड़, खजूर तथा शीशम आदि। लेकिन्

कुछ पेड़ ऐसे भी है जो फायदा के बजाय नुकसान पहुँचाते है उदाहरण के लिए तुम लोगो का चिर परिचित और चहेता पेड़ यूकैलिप्टस। आजकल यही हो रहा है। तुम लोग पुराने और उपयोगी छायादार वृक्षों को काटते जा रहे हो और उनके बदले वृक्षारोपण के नाम पर संख्या गिनाने के लिए बबूल, गुलमोहर और यूकैलिप्टस आदि के पेड़ लगाते जा रहे हो।''

"लेकिन यूकैलिप्टस के पेड़ को आप हानिकारक क्यों कह रहे हैं बरगद दादा। मैंने तो सुना है कि आर्थिक, व्यावसायिक दृष्टि से यह काफी फायदेमन्द होता है। यह बहुत आसानी से बगैर खाद, पानी के उग आता है। बहुत जल्दी तैयार हो जाता है और इसकी लकड़ी भी बहुत महँगी बिकती है।'' बीनू ने कहा।

"हाँ बीनू। तुम्हारी बात काफी हद तक सच है। यूकैलिप्टस का पेड़ पैसा कमाने का अच्छा साधन है। लेकिन इसका एक दूसरा पक्ष भी है जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है। अप्रत्यक्ष रूप से यह पेड़ इतना बड़ा नुकसान करता है जिसकी भरपाई किसी भी रूप में संभव नहीं है।''

"कैसा नुकसान बरगद दादा? जरा स्पष्ट बताइए।''

"सच बात यह है बीनू कि यूकैलिप्टस का पेड़ भारत जैसे देश के लिए उपयुक्त ही नहीं है। इस वृक्ष का गुण है कि यह भूमि के अन्दर से पानी सोख कर जमीन को शुष्क बना देता है। यह वृक्ष अफ्रीकी देशों की दलदली भूमि के लिए उपयुक्त है। दलदली भूमि का पानी सोख कर यह उसे कठोर बना देता है। बगैर सोचे, समझे लोगों ने इसे भारत में भी लगाना शुरू कर दिया जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि जहाँ-जहाँ ये वृक्ष लगाये गये वहाँ नालों, तालाबों और कुआँ तक का पानी सूख गया। वैज्ञानिकों का कहना है कि यूकैलिप्टस का एक प्रौढ़ वृक्ष प्रतिदिन औसतन 80

गैलन तक पानी पृथ्वी से शोषित करके वायुमण्डल मे फेक देता है इस वृक्ष का एक दूसरा दुर्गुण यह है कि यह अपने आसपास की भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट कर के उसे बंजर बना देता है। इस वृक्ष के कारण अब तक लाखों एकड़ सिंचित और उपजाऊ भूमि असिंचित और बंजर बन चुकी है।

इतना ही नहीं यूकैलिप्टस के पेड़ मनुष्य को तो फल अथवा छाया नहीं ही देते, ये पक्षियों के घोंसले बनाने के लिए भी उपयुक्त नहीं होते। इसकी तेज गन्ध के कारण पक्षी पलायन कर जाते हैं। और तो और इसकी पत्तियाँ भी जानवर नहीं खाते। नये शोधों से पता चला है कि यह वृक्ष जहाँ उगता है वहाँ निवास करने वाले लोगों में श्वाँस का रोग पैदा कर देता है।''

बरगद के चुप होते ही आम ने कहना प्रारम्भ किया—''बीनू, अभी तुमने आर्थिक लाभ की बात की थी। यह बात सही है कि यूकैलिप्टस का पेड़ बगैर किसी लागत या मेहनत के बहुत जल्दी तैयार हो जाता है। इसकी लकड़ी कागज बनाने के काम आती है। इसके तने से बल्लियाँ बनती हैं और महँगी बिकती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इतने कम समय में कोई अन्य वृक्ष इतना अधिक आर्थिक लाभ नहीं दे सकता। लेकिन मुझे एक बात बताओ बीनू। आदमी का पेट सिर्फ रुपये, पैसे से भर सकता है क्या? अगर तुम्हें खूब ढेर सारा रुपया, पैसा, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात आदि दे दिए जायें और खाना, पानी न दिया जाये तो क्या तुम जीवित रह सकोगे?''

आम की बातें सुन कर बीनू किसी गहरी चिन्ता में डूब गया। बीनू को खामोश देख कर आम ने फिर कहना शुरू किया—''बोलो भाई। आदमी के जीवित रहने के लिए तो आखिरकार अन्न, जल,, दूध, दही और फल आदि खाद्य पदार्थों की ही जरूरत पड़ेगी न।

अब तुम कह सकते हो कि अगर जेब मे पैसा हो तो सब कुछ खरीदा जा सकता है लेकिन मेरा कहना यह है कि यदि ये चीजें पैदा ही न हों तब क्या स्थिति होगी? खेतों में अन्न न उगे, कुएँ में पानी न रहे, फलों के सारे पेड़ काट दिये जायें और घास, चारा के अभाव में गाय, भैंस दूध देना बन्द कर दें तब फिर कहाँ से पावोगे ये सब चीजें? झोला भर ही नहीं बल्कि तुम बोरा भर कर रुपया लिए घूमते रहो लेकिन जो चीज होगी ही नहीं वह भला मिलेगी कैसे...?''

"हाँ आम जी। बात तो आपने लाख रुपये की कही। सच बात है। कोई कितना भी अमीर क्यों न हो आखिर खाता हो हर कोई अन्न ही है। कोई रुपया-पैसा या सोना-चाँदी थोड़े ना खा सकता है।'' काफी देर से चुप बीनू ने कहा।

"तुमने बिल्कुल ठीक समझा बीनू। इतनी देर से मैं तुम्हें यही बात समझाने का प्रयास कर रहा हूं कि कोई भी काम करने से पहले आदमी को अपना भला-बुरा भी सोचना चाहिए। लालच मे अन्धे होकर रुपये के पीछे भागना कोई अच्छी बात नहीं है।'' बरगद ने कहा।

"अरे बेटा! मैं तो कहती हूँ कि ऐसा पैसा भी भला किस काम का जो दुःख का कारण बने या दवा-दारू में खर्च हो जाये।'' अभी तक चुप बैठी सभी की बातें सुन रही नदी बोल पड़ी।

"क्या कह रही है दादी माँ? आपकी बात का मतलब मैं नहीं समझ पाया। पैसे से तो आदमी अपने सुख के साधन जुटाता है। आप कह रही हैं कि पैसा दुःख का कारण बन जाएगा। भला वो कैसे नदी माँ?'' बीनू ने प्रश्न किया।

"अभी आम ने तुमको समझाया फिर भी यह जरा सी बात

तुम्हारे समझ में नहीं आ रही है? अरे! मैं कहती हूँ कि जब अन्न, जल, फल, हवा और यहाँ तक कि मिट्टी भी प्रदूषित हो जाएगी तो फिर इस वातावरण में रहने वाला प्राणी भला कैसे निरोग रह सकेगा?''

नदी पल भर के लिए साँस लेने को रुकी उसके बाद फिर कहना प्रारम्भ किया—''और तुम क्या समझते हो कि तुम लोग प्रकृति से छेड़छाड़ करोगे तो प्रकृति तुम लोगों को यूँ ही छोड़ देगी? ऐसी बात नहीं है बीनू। प्रकृति भरपूर बदला लेगी बल्कि प्रकृति ने तो बदला लेना प्रारम्भ भी कर दिया है। कहीं प्रलयंकारी बाढ़ तो कहीं भयंकर सूखा, कहीं भूस्खलन और भूकम्प तो कहीं विनाशकारी समुद्री-तूफान। यह सब क्या है? प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का ही तो परिणाम है। प्रकृति विभिन्न तरीकों से बार-बार चेतावनी दे रही है। लेकिन स्वार्थ में अंधा बना मनुष्य उस तरफ ध्यान नहीं दे रहा है। अगर यही स्थिति रही तो आने वाले दिनों में और भी अधिक विनाशकारी दुर्घटनाएं होंगी और तरह-तरह की भयानक बीमारियाँ फैलेंगी। परिणाम यह होगा कि गाँव का गाँव, शहर का शहर बेमौत मर जाएगा और तुम्हारा सारा ज्ञान-विज्ञान धरा का धरा रह जाएगा।''

''नदी माँ। आपने अभी जो प्राकृतिक आपदायें बतायी हैं उनमें से एक यानी बाढ़ के लिए तो स्वयं आप ही जिम्मेदार हैं। यदि आपको सचमुच प्राणियों की चिन्ता है तो फिर प्रति वर्ष बरसात के मौसम में आप उमड़ती क्यों हैं। आपके उमड़ने से जो बाढ़ आती है उसमें सैकड़ों गाँव जलमग्न हो जाते हैं, हजारों घर और मवेशी बह जाते हैं, तथा हजारों एकड़ की फसलें चौपट हो जाती हैं। लोगों द्वारा आपके अन्दर जो कूड़ा-कचरा डाला जाता है उसके कारण गुस्सा हो कर आप बदला लेती है क्या?'' बीनू ने पूछा।

"नही बेटा ऐसी बात नही है ऐसा तो तुम कभी सोचना भी नहीं। माँ कभी भी अपने बच्चों से बदला नहीं लेती। माँ सदैव अपने बच्चों का भला ही सोचती है। तुम लोगों ने लाख मेरी दुर्गति कर डाली है फिर भी मैं तुम लोगों का अहित नहीं सोचती। मुझे इस बात का बहुत दुःख है कि न चाहते हुए भी मुझे उमड़ना पड़ता है और तुम लोगों के विनाश का कारण बनना पड़ता है। लेकिन सच मानो बीनू। मेरे बाढ़ के लिए भी तुम्हीं लोग जिम्मेदार हो। मेरा इसमें कोई दोष नहीं।" नदी बोली।

"वाह नदी माँ वाह। खूब कहा आपने भी। उफनती आप हैं, बाढ़ आप लाती हैं, विनाश आप करती हैं और उसके लिए जिम्मेदार हम लोगों को बता रही हैं।" बीनू ने हँसते हुए कहा।

"मैं बिल्कुल सच कह रही हूँ बीनू। अच्छा चलो, मैं तुम्हें यह बताती हूँ कि नदियों में बाढ़ आने के कारण क्या हैं। तुम्हें तब समझ में आएगा कि मैं सच कह रही हूँ या झूठ। यह तो तुम जानते ही हो कि पानी सदैव ऊपर से नीचे की तरफ बहता है। और तुम्हें शायद यह भी पता हो कि पहाड़ों पर मैदानी क्षेत्र की अपेक्षा काफी अधिक वर्षा होती है। जब वर्षा होती है तो पहाड़ों तथा अन्य ऊंचे स्थानों का पानी काफी तेज गति से नीचे की तरफ बहता है। यह पानी झरनों और नालों से हो कर छोटी नदियों में, छोटी नदियों से बड़ी नदियों में और बड़ी नदियों से अन्ततः समुद्र में गिर जाता है। नदियाँ अपनी क्षमता भर पानी अपने अन्दर रोक लेती है, शेष जल उमड़ कर बह जाता है। तुम्हें यह समझने में भी कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि कोई भी नदी जितनी ही अधिक गहरी होगी उसकी पानी भण्डारण की क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। पहले नदियाँ काफी चौड़ी और गहरी होती थीं इसलिए उनमें पानी भी काफी अधिक रहता था। तुमने पढ़ा या सुना होगा कि पुराने

समय मे जब रेल और सड़को का विस्तार बहुत कम था तब नदियो मे बड़ी-बड़ी जहाजे चला करती थी और सारा यातायात तथा व्यापार इन नदियों के ही माध्यम से होता था। लेकिन आज स्थिति यह है कि जहाज चलना तो दूर नदियों में नावों का चलना भी मुश्किल हो गया है।''

''ऐसा क्यों है नदी माँ।'' बीनू बीच में ही बोल पड़ा।

''उतावले न हो बीनू। बता रही हूँ। इसका कारण यह है कि नदियाँ सिकुड़ कर पहले की अपेक्षा पतली तथा अधिक उथली हो गयी हैं। पतली तथा उथली हो जाने के कारण नदियों की पानी भण्डारण क्षमता बहुत कम हो गयी है। जब बरसात का ढेर सारा पानी एक साथ आता है तो नदियाँ उसे अपने अन्दर रोक नहीं पातीं हैं। जो पानी नदियों की भण्डारण क्षमता से अधिक होता है वह उमड़ कर तट के पास स्थित गाँवों और खेत, खलिहानों में घुस जाता है। इसे ही तुम लोग बाढ़ कहते हो।''

''लेकिन इसमें भला मनुष्य की क्या गलती है?'' बीनू ने पुनः प्रश्न किया।

''बता रही हूँ.....वह भी बता रही हूँ।'' नदी ने हँसते हुए कहा, ''नदियों के सिमटने, उथले होने तथा बाढ़ के लिए मनुष्य सीधे-सीधे जिम्मेदार है। दरअसल पेड़-पौधों का एक विशिष्ट गुण यह है कि वे अपनी जड़ों द्वारा मिट्टी को बाँधे रहते हैं। पर्वतों पर स्थित घने जंगल एक आवरण का काम करते हैं। जब बरसात के पानी की तेज धार आसमान से गिरती है तो उसकी चोट को ये जंगल अपने ऊपर झेल लेते हैं। भूमि पर गिरने वाले वर्षा जल का वेग वृक्षों से टकरा कर कम हो जाता है। इसलिए वह मिट्टी को नुकसान नहीं पहुँचा पाती है। लेकिन वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और वनों के विनाश का परिणाम यह हुआ है कि अधिकांश पहाड़ नंगे

हो गये हैं। अब बरसात की धार सीधी जमीन पर पड़ती है जिसके कारण मिट्टी की पर्त कट कर पानी के साथ बह जाती है। पानी की धार के साथ बह कर आयी यह मिट्टी नदियों की तलहटी में एकत्र हो जाती है। यही कारण है कि नदियों की गहराई कम हो गई है और नदियाँ उथली हो गई हैं।"

"अब समझ में आया कि बरसात के दिनों में नदियों का पानी गंदा क्यों हो जाता है।"

"हाँ बीनू। बरसात में पहाड़ों की मिट्टी बहकर आने के कारण ही नदियों का पानी गन्दा रहता है। मिट्टी के इस प्रकार बह जाने का एक बहुत बड़ा नुकसान यह है कि इस मिट्टी के रूप में पृथ्वी की उपजाऊ सतह बह जाती है। अब तुम पूछ सकते हो कि उपजाऊ सतह क्या होती है। तो लगे हाथ तुम्हें बता दूँ कि पृथ्वी पर मिट्टी की तीन परतें होती हैं जिनमें सबसे ऊपरी परत ही कृषि के योग्य होती है। इस पर्त का निर्माण हजारों वर्षों में होता है। दुःख की बात यह है कि बरसात के पानी के साथ यही उपजाऊ मिट्टी बह जाती है। अनुमानतः प्रति वर्ष 5.3 अरब टन उपजाऊ मिट्टी पानी के संग बह कर समुद्र में जा मिलती है जिससे 80 लाख टन पोषक तत्वों का नुकसान होता है। वैज्ञानिकों का आकलन है कि इतने पोषक तत्वों में कम से कम 30 लाख टन अनाज की पैदावार हो सकती है। दूसरी बात यह है कि पहले नदियों के तट खूब विस्तृत हुआ करते थे लेकिन अब तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण खेती एवं आवास हेतु भूमि की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। लोग अतिक्रमण करके नदियों के किनारे मकान बनाते जा रहे हैं तथा नदियों के किनारे बाँध बना कर नदी तट की भूमि खेती के लिए हथियाते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप नदियाँ सिकुड़ती जा रही हैं। अब स्वयं तुम ही बताओ कि बाढ़ के

त जिम्मेदार है।"

माँ। यदि आप की बातें सत्य हैं तब तो निःसं
हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं।"

ने का एक दूसरा कारण यह है कि समुद्र का ज
है। और इसके लिए भी मनुष्य ही जिम्मेदार है
ने नदी माँ?"

थोड़ी देर पहले बरगद ने तुम्हें बताया था
कार्बन की मात्रा बढ़ने के कारण ध्रुवों पर जमी
है। ध्रुवों की बर्फ का पिघला पानी समुद्र में आ
प्रतिदिन समुद्र की सतह ऊँची होती जा रही है।
ही हो कि नदियों का पानी समुद्र में गिरता है। इ
सतह जितनी ही नीची होगी नदियों का पानी उ
उसमें गिर सकेगा। लेकिन समुद्र का जल स्तर
उसमें नदियों के पानी के गिरने की गति धीमी
हाड़ों से आने वाला पानी तो बहुत तेज गति से

है लेकिन नदियाँ उस पानी को उतनी तेजी से समुद्र में नहीं उड़ेल पाती हैं। परिणाम यह होता है कि नदियों में पानी का जमाव बढ़ जाता है और बाढ़ की स्थिति आ जाती है।"

"बाढ़ आने का एक तीसरा कारण भी है और उसके लिए भी खुद आदमी ही जिम्मेदार है। पहले गाँवों में ढेर सारे छोटे-बड़े गड्ढे, पोखरे और तालाब आदि होते थे। जो बरसात के पानी का काफी बड़ा हिस्सा अपने अन्दर भण्डार कर लेते थे। अब तुम लोगों ने उन गड्ढों और तालाबों को भर कर वहाँ मकान, दुकान या सड़कें आदि बना ली हैं। परिणामस्वरूप पानी की वह मात्रा भी बहकर नदी में ही आ जाती है जो अंततः बाढ़ का कारण बनती है।"

"नदी माँ। यदि आप की बातें सच हैं तबतो वास्तव में स्थिति बहुत चिन्ताजनक है और सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि मनुष्य ऐसे निश्चिंत बैठा है जैसे कोई बात ही न हो।"

"हाँ बीनू। यही बात तो मेरी भी समझ में नहीं आती कि अपने आपको सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी मानने वाला मनुष्य स्वयं अपने लिए विनाशकारी स्थितियाँ क्यों पैदा कर रहा है। आज स्थिति यह है कि विकास और विज्ञान के नाम पर हवा, पानी, नदी, पहाड़ और धरती-आकाश आदि सृष्टि का एक भी घटक ऐसा नहीं है जिसके साथ मनुष्य ने छेड़छाड़ न की हो। सर्वाधिक दुर्दशा तो इस पृथ्वी की हुई है जिसे मनुष्य ने नीबू की तरह निचोड़ डाला है। पृथ्वी की तो ऐसी-तैसी कर डाली है मनुष्य ने।"

"पृथ्वी की दुर्दशा से आपका क्या आशय है नदी माँ।"

"तुम्हें यह तो पता ही है कि यह पृथ्वी हम सभी की जननी है। सभी चर, अचर इस पृथ्वी से ही जन्म लेते हैं और पुनः इसी में समा जाते हैं। अभी कुछ देर पहले बरगद ने भी तुम्हें बताया है कि हमारे सौरमंडल के कुल नौ ग्रहों में सिर्फ पृथ्वी ही एकमात्र

ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है। शेष ग्रहों पर अभी तक जीवन के संकेत नहीं मिले हैं। यह पृथ्वी सिर्फ मिट्टी-पत्थर का गोला भर नहीं है बल्कि पेट्रोल, गैस, डीजल, कोयला आदि कार्बनिक पदार्थों, तरह-तरह के खनिजों, लवणों और रत्नों की खान है। यह धरती मनुष्य ही नहीं बल्कि सभी जीवधारियों की सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करती है। लेकिन इस धरती की क्षमता भी निश्चित है। इसकी भी अपनी सीमाएं हैं। उचित यही है कि धरती आराम से जितना देती रहे हम उतना ही लेते रहे। इसी में सभी की भलाई है। लेकिन मनुष्य को संतोष कहाँ है? वह तो अधिकाधिक निचोड़ लेने के लिए आतुर है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है धरती का दोहन भी बढ़ता जा रहा है। परिणाम यह है कि धरती भी अब और अधिक दे सकने से जवाब देने लगी हैं।''

''आपकी बातें कुछ-कुछ तो मेरी समझ में आ रही है नदी माँ लेकिन मैं पूरी तरह नहीं समझ पा रहा कि धरती के दोहन से आपका क्या तात्पर्य है।''

''देखो बीनू। मैं तुम्हें उदाहरण देकर समझाती हूँ। उदाहरण के लिए अन्न उत्पादन की बात ही ले लो। धरती के अन्न उत्पादन की क्षमता निश्चित है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य को अन्न की कमी पड़ने लगी। अधिक अन्न उपजाने के लिए उसने खेतों में रासायनिक उर्वरक डालना प्रारम्भ किया। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गई मनुष्य खेतों में उर्वरकों की मात्रा बढ़ाता गया। उसने यह नहीं सोचा कि इसका कुछ दुष्परिणाम भी हो सकता है। सीमा से अधिक रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों के प्रयोग से मिट्टी प्रदूषित हो गयी। प्रदूषित मिट्टी में उपजा अन्न, फल और सब्जियाँ भी प्रदूषित हो गयीं। वैज्ञानिकों का कथन है कि ये प्रदूषित खाद्य-पदार्थ विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं क्योंकि रसायनों

एव कीटनाशको का कुछ अश उनमे शेष रह जाता है पिछले कुछ दशको मे फलो को कृत्रिम रूप से पकाने के लिए रासायनिक गैसो के प्रयोग का प्रचलन काफी तेजी से बढ़ा है। परिणामस्वरूप अब फलों में न तो पहले जैसा स्वाद रहा है न ही पौष्टिकता। बल्कि सच्चाई तो यह है कि रसायनों से प्रदूषित फल अब फायदा पहुँचाने के बजाय मनुष्य को उल्टे नुकसान पहुँचाने लगे हैं।''

नदी साँस लेने के लिए पल भर को रुकी, फिर उसने कहना प्रारम्भ किया—''और बीनू। उर्वरकों तथा कीटनाशकों के बेहिसाब उपयोग का दूसरा दुष्परिणाम यह हुआ है कि धरती की उर्वरा शक्ति समाप्त हो गयी है, और उपजाऊ भूमि तेजी से बंजर तथा रेगिस्तान में बदलती जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस पूरी दुनिया की कुल भूमि का क्षेत्रफल 13.5 अरब हेक्टेयर है जिसमें लगभग 22 प्रतिशत भाग यानी 3.03 अरब हेक्टेयर भूमि कृषि किए जाने योग्य है। अनुमान है कि विभिन्न कारणों से इसमें से 2 अरब हेक्टेयर भूमि खराब हो चुकी है। कृषि भूमि के खराब होने की यह रफ्तार 50 से 70 लाख हेक्टेयर प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है। इसी प्रकार अपने देश भारत की कुल भूमि का क्षेत्रफल 3210 लाख हेक्टेयर है जिसमें कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल 1430 लाख हेक्टेयर है। अनुमान है कि इसमें से 57 प्रतिशत भूमि खराब हो चुकी है क्योंकि अन्य देशों की देखा-देखी भारत में भी उर्वरकों तथा रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। भारत में वर्ष 1951-52 में उर्वरक की खपत सिर्फ 7 लाख टन थी जो सन् 2000 में बढ़ कर 200 लाख टन हो चुकी है। इसी प्रकार सन् 1951-52 में रसायनों की खपत 23550 टन थी जो सन् 2000 में बढ़ कर 95000 टन हो चुकी है।''

''इसका मतलब कि हम रोज अन्न, जल, फलों और साग-

सब्जियो के साथ ढेरों घातक रसायन भी खा जाते हैं क्यो नदी माँ?'' बीनू ने प्रश्न किया।

"हाँ बीनू। बिल्कुल ठीक समझा तुमने। बहुत से ऐसे रसायन हैं जिनका प्रभाव सैकड़ों वर्षों तक मिट्टी में बना रहता है और उनका अंश फसलों की पैदावार में भी आ जाता है। न सिर्फ हमारे खाद्य पदार्थ बल्कि इन उर्वरकों और रसायनों के कारण अब मवेशियों का दूध भी पहले जैसा पौष्टिक नहीं रह गया है। क्योंकि ये मवेशी भी तो आखिर यही प्रदूषित अन्न, जल और चारा खाते हैं न। बहुत जगह तो गायों, भैसों से अधिक दूध लेने के लिए लोग उन्हें इंजेक्शन लगाया करते हैं। तुम स्वयं सोचो इंजेक्शन के द्वारा प्राप्त दूध उसके प्रभाव से भला कैसे मुक्त रह सकेगा।''

"लेकिन मुश्किल तो यह है नदी माँ कि इन उर्वरकों का प्रयोग अब रोका भी नहीं जा सकता। यदि खेतों में उर्वरक न डाले जाय तो पैदावार कम हो जाएगी। और यदि पैदावार कम हुई तो देश में भुखमरी की स्थिति आ जायेगी।''

"देश में भुखमरी की स्थिति तो आनी ही है बीनू। उसे कोई भी नहीं रोक सकता। क्योकि जिस तेजी से जनसंख्या बढ़ रही है उस तेजी से पैदावार नहीं बढ़ने वाली। धरती अपनी क्षमता का अधिकतम दे चुकी है तथा अब और अधिक पैदावार देने से इन्कार करने लगी है। वैज्ञानिको का अनुमान है कि इक्कीसवीं शताब्दी के मध्य तक विश्व की आबादी 12 खरब के लगभग हो जाएगी। इतने अधिक लोगों को खिला सकना इस पृथ्वी के वश में नहीं। वैसे भी औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। अब तुम्हीं सोचो। एक तरफ तो आबादी बढ़ती जा रही है और दूसरी तरफ कृषि भूमि घटती जा रही है। ऐसे में भुखमरी न होगी तो और क्या होगी।''

"लेकिन यह कहाँ का न्याय है नदी माँ कि करे कोई और भरे कोई। गलतियाँ मनुष्य कर रहा है और उसकी सजा हम बेकसूरों को भुगतनी पड़ रही है।" पीछे की तरफ से पतली, सुरीली आवाज में किसी ने यह बात कही। आवाज सुन कर बीनू चौंक पड़ा। उसने उचक कर देखा तो पाया कि नदी और पेड़-पौधों के झुण्ड के पीछे ढेर सारी मछलियां, कछुवे, घोंघे तथा अन्य विभिन्न प्रकार के ढेरो छोटे-बड़े जीव-जन्तु रेत पर बैठे हुए थे। उन्हीं में से एक भूरी-सुनहली मछली ने नदी से प्रश्न किया था।

"तुम्हारी बात सच है मछली बिटिया। मैं तुम्हारी परेशानी समझ रही हूँ। सचमुच तुम लोगों के साथ बहुत अन्याय हो रहा है। इसी को कहते हैं कि गेहूँ के साथ-साथ बेचारा घुन भी पिसा जाता है।" नदी मछली को पुचकारते हुए बोली।

"हम मनुष्यों से इन मछली रानी को भला क्या तकलीफ है नदी माँ? ये किस बात की शिकायत कर रही है? बीनू ने नदी से पूछा। बीनू की बात सुन कर नदी से पहले स्वयं मछली ही बोल पड़ी—"तुम सिर्फ परेशानी की बात पूछ रहे हो बीनू। यहाँ हमारे जीवन-मरण का संकट पैदा हो गया है। तुम लोगों की मनमानी के कारण न सिर्फ हमारे बल्कि हमारी पूरी प्रजाति के अस्तित्व के समक्ष प्रश्न चिह्न लग गया है। अपने स्वार्थ के लिए तुम लोग इस समूची सृष्टि का विनाश करने पर तुले हो।"

"इतना गुस्सा करना ठीक नहीं मछली रानी। पहले पूरी बात तो बताओ कि हमने तुम्हारे साथ क्या अन्याय किया है?" बीनू ने कहा।

"अरे वाह। तुम तो ऐसे अनजान बन रहे हो जैसे कुछ जानते ही नहीं। बरगद दादा, आम दादा और दादी अम्मा नदी ने इतनी बातें समझाई हैं तुम्हें, फिर भी तुम्हारे पल्ले कुछ नहीं पड़ा?"

मछली बोली

"बहुत कुछ पल्ले पड़ा है मछली रानी। बरगद दादा, आम दादा और नदी अम्मा की बातों से मुझे ढेर सारी नई जानकारियाँ मिली हैं। मैं चाहता हूँ कि उसी प्रकार तुम भी कुछ नई बातें बताओ। तुम्हें क्या परेशानी है। यह भी बताओ। हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।" बीनू ने कहा।

"क्या तुम्हें पता नहीं कि जिस प्रकार पृथ्वी पर भाँति-भाँति के जीव-जन्तु रहते हैं उसी प्रकार जल के अन्दर भी अनेकों प्रकार के प्राणधारी निवास करते हैं।"

"हाँ भई। मुझे पता है कि जल के अन्दर जीव-जन्तुओं का एक पूरा संसार बसा है। सूक्ष्मतम प्राणी अमीबा से लेकर विशालतम प्राणी ह्वेल तक समुद्र के अन्दर ही पाए जाते हैं।"

"तब तो तुम्हें यह भी पता होना चाहिए कि ये जलीय जीव जल के बगैर जीवित नहीं रह सकते।"

"हाँ भई। खूब अच्छी तरह पता है। बल्कि तुम्हारे बारे में तो मैंने कहीं एक कविता भी पढ़ी है कि—

मछली जल की रानी है
जीवन इसका पानी है
हाथ लगावोगे तो डर जाएगी
बाहर निकालोगे तो मर जाएगी।"

"अब तुम स्वयं सोचो। जब हमारे जीवन का आधार ही नहीं होगा तो हमारा जीवन भला कैसे संभव हो सकेगा। गड्ढों,तालाबों और छोटी-मोटी नदियों को तो खैर तुम लोगों ने समाप्त ही कर दिया है। शेष बची नदियों से लेकर समुद्र तक के जल को तुम लोगों ने इतना प्रदूषित और जहरीला बना दिया है कि हम लोगों का जीवन असंभव होता जा रहा है। जल की कमी और प्रदूषण के

कारण सैकड़ो प्रकार के जलीय जीवो की प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी है। यदि यही स्थिति रही तो हम लोग भी एक दिन कथा, कहानी की चीजें बन कर रह जायेंगे।''

''हाँ। अभी थोड़ी देर पहले बरगद दादा ने जल-प्रदूषण के विषय में बताया तो था। लेकिन क्या अन्तर पड़ता है। कुछ छोटे-मोटे जीव-जन्तु यदि समाप्त भी हो जाते हैं तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ेगा?''

''नहीं बीनू। ऐसा न सोचो। सृष्टि के हर एक प्राणी का अपना महत्व है। छोटे-बड़े जीव-जन्तु और पेड़-पौधे सभी जीवधारी एक दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे के लिए आवश्यक भी है। जहाँ तक हम जलीय प्राणियों और वनस्पतियों का प्रश्न है, हम मनुष्य के लिए भोजन के महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। दुनिया की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा नदियों और समुद्रों से प्राप्त खाद्य सामग्री पर ही निर्भर है। इसके अतिरिक्त जैविक विकास, संतुलन एवं प्रदूषण नियंत्रण में भी हमारी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उदाहरण के लिए जलीय जीव कछुवा जल-प्रदूषण दूर करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। वह पानी में सड़ती गन्दगी को खा लेता है। कई जलीय जीवों की अस्थियों तथा ऊपरी आवरणों का नाना प्रकार से उपयोग होता है। सीप,घोंघा तथा इसी प्रजाति के अन्य जीवों के कवच न सिर्फ सजावट के लिए बल्कि कई प्रकार की औषधियों के निर्माण में भी प्रयुक्त होते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि हम प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से मानव जाति की असीम सेवाएँ करते हैं। यदि तुम लोग सोचते हो कि अन्य जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों को समाप्त करके तुम लोग सुखपूर्वक रह सकते हो तो यह तुम लोगों की बहुत बड़ी भूल है।'' मछली ने कहा।

''अरी छोड़ो भी मछली बिटिया। इस बक्-बक् करने से कोई

लाभ नही जब मनुष्य को स्वय अपने भले-बुरे की चिन्ता नही है तो फिर हमारे-तुम्हारे चिन्ता करने से भला क्या होने वाला है अपनी मनमानी और प्रकृति के साथ छेड़खानी का दुष्परिणाम ये लोग स्वयं ही भुगतेंगे।'' मछली की बात को बीच में ही काटते हुए बरगद बोल पड़ा।

"अरे नहीं-नहीं बरगद दादा। इतना गुस्सा न होइए। आप बुजुर्ग हैं। हमारे शुभ-चिन्तक हैं। अगर हम अज्ञानतावश कोई गलती कर रहे हैं तो आप हमें सही रास्ता बताइए। कहा भी गया है—

"क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।'' बीनू ने बरगद से कहा।

"अज्ञानतावश नहीं बीनू तुम लोग जो भी कर रहे हो स्वार्थवश कर रहे हो। वैसे तो मानव अपने आप को सृष्टि की सर्वोत्तम रचना मानता है। बुद्धि में भी अपने आगे किसी को नहीं समझता। इतनी बड़ी पृथ्वी से संतोष नहीं हुआ तो चाँद-तारों पर पहुँच गया। ईश्वर से होड़ लेकर उसने प्राणियों के प्रतिरूप यानी क्लोन तक बना डाला। वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर उसने अणु बम, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, नाइट्रोजन बम आदि जाने क्या-क्या बना लिया। लेकिन कभी यह नहीं सोचा कि इस अनियंत्रित एवं असंतुलित प्रगति का दुष्परिणाम क्या होगा। ठीक ही कहा है किसी ने कि हर उत्थान के बाद पतन होता है। हर विकास का अंत विनाश होता है।''

"छोड़िए बरगद दादा। हम सब स्वीकार करते हैं। हम मानते हैं कि हमने बहुत गलतियाँ की हैं लेकिन अब यह तो बताइए कि इन गलतियों के सुधार का उपाय क्या है। चलिए यही बताइए कि इस चौतरफा बढ़ते प्रदूषण को कैसे रोका जा सकता है।''

'देखो बीनू यदि तुम लोग सचमुच प्रदूषण के प्रति गभीर हो और सचमुच प्रदूषण रोकना चाहते हो तो पहला काम तो यह करो कि अपने दैनिक उपयोग में प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग बिल्कुल बन्द कर दो। बाकी कूड़ा-करकट तो देर-सवेर सड़ जाता है लेकिन प्लास्टिक की थैलियां नहीं नष्ट होतीं। ये सैकड़ों वर्षों तक ज्यों की त्यों बनी रहती हैं और इस प्रकार स्थायी प्रदूषण फैलाती हैं। बहुत से लोग इन्हें जला देते हैं। ऐसा भूल कर भी नहीं करना चाहिए क्योंकि इसके जलने से जो धुआं निकलता है वह अत्यधिक जहरीला होता है।''

''ठीक कह रहे हैं आप। इस विषय में मैंने अखबारों में भी पढ़ा है। चलिए और बताइए।''

''पर्यावरण प्रदूषण का दूसरा बड़ा कारण है पेड़ों की तेजी से घटती संख्या। इतनी देर की बातचीत से तुम्हें यह तो समझ में आ ही गया होगा कि पेड़-पौधे कितने अधिक और बहुआयामी उपयोग के हैं। यदि जगह-जगह ढेर सारे पेड़ लगा दिए जायें तो प्रदूषण की आधी समस्या तो स्वतः हल हो जाय। लेकिन हाँ। पेड़ लगाते समय एक बात ध्यान में रखना होगा कि केवल संख्या गिनाने के चक्कर में यूकैलिप्टस, जंगली बबूल, गुलमोहर, शीशम और कनेर जैसे दिखाऊ पेड़ न लगा दिए जायें। इनसे समस्या का समाधान नहीं होने वाला। भले ही संख्या कम रहे लेकिन जो पेड़ लगाए जायें वे छायादार और फलदार श्रेणी के दीर्घजीवी पेड़ हों। जैसे— आम, महुवा, पीपल, बरगद, जामुन, गूलर और नीम आदि के पेड़। ध्यान देने की एक दूसरी बात यह भी है कि गड्ढा खोद कर उसमें पौधा रोप देने मात्र से जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। पौधे जब तक बड़े नहो जायें और भूमि के अन्दर सही तरह से जड़ न पकड़ लें तब तक उनकी देखभाल करना और खाद-पानी देना

रगद ने बताया।

हेन्दू धर्म में तो वैसे भी पेड़ लगाना बहुत पवित्र
। पुराने समय में धनी लोग पुण्य की लालसा मे
गीचे लगवाते थे और कुवाँ खुदवाते थे। इतिहास
ा है कि सम्राट अशोक, अकबर तथा अन्य कई
के किनारे फलदार वृक्ष लगवाये थे।" नदी ने

तो बहुत आसान काम है मैं अकेले ही ढेर सारे
हूँ।" बीनू ने चहकते हुए कहा।

हीं बीनू यह बहुत मुश्किल काम है। पहले शुरू
झ में आएगा कि इसमें कैसी-कैसी दिक्कतें आत

डरा रहे हैं बरगद दादा। लेकिन मैं डरने वाल
म हो या मुश्किल मैं पेड़ जरूर लगाऊँगा। ढे
। चारों तरफ पेड़ ही पेड़ हो जायेंगे। हरियाली ह

हरियाली ढेर सारे पेड़....ढेर सारी हरियाली...''

3

"बीनू....बीनू......क्या बात है बेटा..? कोई सपना देख रहे हो क्या..? उठो बेटा...बीनू....''

बीनू ने हड़बड़ा कर आँख खोली तो पाया कि दादा जी उसे झिंझोड़ कर जगा रहे थे। वह अपनी आँखें मलते हुए उठ बैठा और आँखें फाड़-फाड़ कर आश्चर्य से चारों तरफ देखने लगा।

"क्या बात है बीनू....अभी नींद में तुम न जाने क्या बड़बड़ा रहे थे....कोई डरावना सपना तो नहीं देखा तुमने..?" बीनू के सिर पर प्यार से हाथ फिराते हुए दादा जी ने पूछा।

"सपना..? क्या मैं सपना देख रहा था...बड़बड़ा रहा था...?" बीनू ने चौंक कर उल्टे प्रश्न किया।

"हाँ बेटा। लगता है तुम कोई सपना देख रहे थे....तुम नींद में बड़बड़ा रहे थे कि—"मैं पेड़ लगाऊंगा..खूब ढेर सारे पेड़ लगाऊँगा.....चारों तरफ हरियाली हो जाएगी....ढेर सी हरियाली...ढेर सारे पेड़..." और भी न जाने क्या-क्या बड़बड़ा रहे थे तुम।" दादा जी ने बताया।

"हाँ बेटे। तुमने जरूर कोई खराब सपना देख लिया है....कहीं डर तो नहीं गये तुम।" पास खड़ी दादी जी बोलीं।

"खराब नहीं दादा जी मैंने तो बहुत अच्छा सपना देखा है। बहुत मजेदार सपना, आप को बताऊँ दादा जी कि मैंने क्या देखा है?"

"नही अभी नहीं तुम्हारे सपने की बात बाद में करेंगे, देखो दिन काफी निकल आया है। चलो पहले कुल्ला-दातून करो और स्नान करके नाश्ता करो।"

नहाने-धोने और नाश्ता कर चुकने के बाद बीनू अपने दादा

जी के पास बाहर वाले दालान में आ गया। दादा जी कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे। बीनू दादा जी के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और दादा जी के हाथ से अखबार ले कर एक तरफ रखते हुए बोला—"अखबार बाद में दादा जी। पहले मेरे सपने की बात सुनिए।"

"अच्छा चलो सुनाओ कि तुमने क्या खास चीज देखी है सपने मे।" दादा जी ने हँसते हुए कहा।

बीनू ने सपने में जो कुछ भी देखा था दादा जी को सुनाने लगा। सपने की सारी बातें तो उसे याद नहीं रह गयी थीं फिर भी उसे जितना कुछ स्मरण था उसने क्रमबद्ध तरीके से सुना डाला। दादा जी भी उसकी बातें बहुत ध्यान पूर्वक सुनते रहे। सपने की सारी बातें बता चुकने के बाद बीनू ने कहा—"चलिए दादा जी। हम लोग गाँव में घूम कर सब लोगों को वृक्षारोपण के फायदे समझायें और उन्हें वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करें।"

"अरे पगले। तू स्वप्न में देखी बातों को लेकर भला इतना क्यों परेशान हो रहा है? फिर गाँव के लोगों को भला इतनी फुरसत कहाँ है कि वे तुम्हारी बातों को सुनें और तुम्हारे कहने पर वृक्षारोपण करें।"

"क्यों दादाजी? हम कोई खराब बात तो कह नहीं रहे हैं। यह तो सभी के फायदे की बात है और इसमें कुछ खर्च भी नहीं होना है। यदि प्रत्येक परिवार के लोग सिर्फ एक पेड़ लगा दें तब भी सैकड़ों पेड़ हो जायेंगे अपने गाँव में।"

"बात तो तुम्हारी ठीक है बीनू कि पेड़ लगाना सामूहिक हित की बात है। धर्म में भी इसे पुण्य का कार्य कहा गया है लेकिन लोग इस बात को समझे तब न।"

"आपका कहना भी सच है दादा जी कि लोग इस प्रकार की बातों पर बहुत कम ध्यान देते हैं। लेकिन प्रयास करने में क्या हर्ज

है यदि सौ मे सिर्फ दस लोग भी हमारी बात मान ले तब भी बहुत कुछ हो सकता है। अच्छा आप यह बताइए कि इस गाँव का ग्राम प्रधान कौन है। हम पहले उनसे ही बात करते हैं। देखें उनका क्या विचार है?"

"इस गाँव के ग्राम प्रधान तो आजकल राम मूरत चौधरी हैं। वो बस अड्डा से पूरब तरफ जो बड़ा सा नया मकान दिखता है न वही मकान है चौधरी जी का।"

"तो चलिए दादा जी। मुझको उनके पास ले चलिए। मैं उनसे बात करूंगा।"

बीनू की जिद के आगे दादा जी की एक न चल सकी। वे बीनू को साथ ले कर चौधरी जी के यहाँ गये। संयोग से चौधरी जी घर पर ही मिल गये। उन्होंने बीनू के दादा जी को आते देखा तो घर से निकल आए और हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए बोले— "आइए-आइए....मास्टर साहब, कहिए कैसे कष्ट किया आपने?"

"चौधरी जी। यह मेरा पोता है बीनू। यही जिद करके मुझे आपके पास ले आया है। यह आपसे कुछ बाते करना चाहता है।" चौधरी जी के बरामदे में कुर्सी पर बैठते हुए दादा जी ने कहा।

"अच्छा। तो क्या ये मुन्ना बाबू के बेटे हैं?"

"हाँ चौधरी जी। यह मुन्ना का बड़ा बेटा है। दसवीं की परीक्षा दे कर परसों ही गाँव आया है।"

"बड़ी प्रसन्नता हुई इनको देख कर। आइए....आप लोग अन्दर आइए। अन्दर कमरे में बैठ कर आराम से बातें करते हैं।" चौधरी जी ने कहा और बीनू तथा उसके दादा जी को अपने बैठका में ले गये। बैठका में लकड़ी की एक बड़ी सी चौकी तथा दो लम्बे-लम्बे बेंच पड़े थे। बीनू तथा उसके दादा जी एक बेंच पर पास-पास बैठ गये।

"मास्टर साहब। इस साल तो बड़ी विकट गर्मी पड़ रही है। अभी मई के पहले सप्ताह में ही यह हाल है तो फिर जून में भला क्या दशा होगी।" सामने वाली बेंच पर बैठते हुए चौधरी जी ने कहा।

दादा जी कुछ बोलें इससे पहले ही बीनू बोल पड़ा—"मैं आप से इसी विषय में बात करने आया हूँ चौधरी जी। आपकी बात सच है कि इस वर्ष कुछ अधिक ही गर्मी पड़ रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह गर्मी प्रति वर्ष इसी प्रकार शनैः-शनैः बढ़ती चली जाएगी तथा अपने साथ सूखा, अकाल और भयानक बीमारियाँ भी लाएगी। लेकिन इसके पीछे गलती किसी और की नहीं बल्कि स्वयं हमारी ही है।"

"वह कैसे बेटा?" चौधरी जी ने प्रश्न किया।

"बताता हूँ......बताता हूँ। पहले आप यह बताइए कि आपकी उम्र कितनी है?"

"मेरी उम्र अड़तालिस वर्ष हो चुकी है बीनू।"

"अच्छा अब यह बताइए कि अपनी अड़तालिस साल की उम्र में आपने कुल कितने पेड़ लगाए हैं।"

"कोई खास नहीं। मेरे घर के सामने ये जो पाँच-छः यूकैलिप्टस के पेड़ दिख रहे हैं इनके अलावे कोई और पेड़ तो नहीं लगाए हैं मैंने।"

"तो समझ लीजिए कि इस भयंकर गर्मी का यही कारण है। पुराने छायेदार पेड़ एक-एक करके कटते जा रहे हैं। लेकिन उनके स्थान पर नये पेड़ नहीं लगाये जा रहे हैं। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन वर्षा की मात्रा कम होती जा रही है और वायुमंडल गरम होता जा रहा है।"

"बात तो तुम ठीक कह रहे हो बीनू। मुझको याद है कि हमारे बचपन में इस गाँव के चारों ओर कई घने बगीचे थे। हर तरफ पेड़

ही पेड़ नजर आते थे लेकिन आज लगभग सारे बगीचे कट चुके हैं। उनकी जगह खेत और नये-नये मकान बन गये है।''

''तब तो निश्चित ही उन दिनो वर्षा भी अधिक होती रही होगी।''

''हाँ बीनू। मुझे खूब अच्छी तरह से याद है। हमारे बचपन के दिनो जब बरसात शुरू होती थी तो चार-चार, पाँच-पाँच दिनों या फिर हफ्ते-हफ्ते भर तक रुकने का नाम ही नहीं लेती थी। अब तो उन दिनों के मुकाबले आधी बारिश भी नहीं हो रही है।''

''तब तो शायद आपकी समझ में यह बात आ गई होगी कि पेड़-पौधों का वर्षा और वायुमंडल के तापमान से सीधा सम्बन्ध है।''

''हाँ बेटा। बात तो तुम ठीक कह रहे हो।''

''मैं आपको यही बताने आया हूँ चौधरी जी कि यदि हम सबको इस पृथ्वी पर चैन से रहना है तो हमें प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ बन्द करनी होगी। फिर से एक अभियान चला कर वृक्षारोपण करना होगा और घने, छायादार वृक्ष लगाने होंगे। वरना एक दिन यह पृथ्वी दहकती हुई भट्ठी बन जायेगी और हम सभी उसमें झुलस कर मर जायेंगे।'' बीनू ने कहा।

''हाँ बीनू। अक्सर अखबारों में भी छपता रहता है तथा रेडियो और टी0वी0 पर भी इस प्रकार की चर्चाएं होती रहती हैं कि पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। शायद तुम्हारा संकेत उसी तरफ है।'' चौधरी जी बोले।

''हाँ चौधरी जी। मेरा संकेत उसी तरफ है। मैं आपको विस्तार से बताता हूं कि वृक्षारोपण के कितने फायदे हैं और वृक्षों के कटने से कितना नुकसान है।'' बीनू ने कहा और अपने सपने की बात चौधरी जी को बताने लगा। चौधरी जी बीनू की बातें पूरी तन्मयता से सुनते रहे। और बीनू की बात समाप्त होने पर बोले—''तुमने तो

बहुत महत्वपूर्ण बाते बताई बेटा सचमुच वृक्ष हमारी अनमोल सेवा करते हैं। वृक्षों के बगैर तो हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।"

"हाँ चौधरी जी। इसीलिए आप से मेरा निवेदन है कि आप गाँव के लोगों की एक बैठक बुला कर उन्हें ये सारी बातें बताइए। आप लोगों को समझाइए कि वे हरे पेड़ों को काटना बन्द करें और अधिक से अधिक संख्या में नये पेड़ लगाएं। मेरी इच्छा है कि अगले महीने बरसात शुरू होने पर हम लोग अपने गाँव में कम से कम पाँच सौ छायादार पेड़ अवश्य लगाएं।" बीनू ने कहा।

"पाँच सौ? इतने ढेर सारे पेड़ एक साथ?" चौधरी जी चौंक पड़े।

"हाँ चौधरी जी। मैं पाँच सौ पेड़ों की बात इसलिए कह रहा हूँ कि यदि किसी कारणवश उनमें से आधे पेड़ सूख जायें और कुछ पेड़ आवारा मवेशी चर जायें तो भी कम से कम दो सौ पेड़ तो तैयार हो ही जायें।"

"लेकिन इतने सारे पेड़ लगाएगा कौन?"

"क्यों? भला इसमें क्या परेशानी है? अपने इतने बड़े गाँव में कम से कम पाँच सौ परिवार तो होंगे ही। यदि हर परिवार को एक पेड़ लगाने की जिम्मेदारी दे दी जाय तो भी पाँच सौ हो जायेंगे।"

"दूसरी समस्या यह है कि एक साथ इतने ढेर सारे पौधे उपलब्ध कहाँ से होंगे? नर्सरी से खरीदने पर तो काफी पैसे लग जायेंगे।" चौधरी जी ने दूसरी शंका प्रकट की।

"पौधों की तो कोई समस्या ही नहीं है चौधरी जी। पौधे तो आप जितने चाहेंगे उतने मिल जायेंगे। और वह भी बिल्कुल मुफ्त। बस समस्या उनको शहर से यहाँ तक ले आने की होगी।"

'ले आने की समस्या तो हम हल कर लेगे गाँव मे कम से कम दस लोगों के पास निजी ट्रैक्टर है। हम ट्रैक्टरों की ट्राली पर पौधे लाद लायेंगे। लेकिन पहले यह तो पता चले कि उन्हें लाना कहाँ से होगा।" चौधरी जी बोले।

"पौधे तो वन-विभाग के पौधशाला से मिल जायेंगे। वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार स्वयं तमाम तरह की योजनाएं चलाती रहती है। चलिए कल सुबह जिला मुख्यालय चले और वहाँ वन विभाग के अधिकारियों से बात करें। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम पहले से अपनी आवश्यकता बता देंगे तो वन विभाग वाले पौधों की व्यवस्था कर देंगे।"

गाँव के प्रधान चौधरी जी बीनू की बातों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बीनू के दादा जी से बात की और अगले दिन सवेरे की बस से जिला मुख्यालय जाने का कार्यक्रम तय किया। चौधरी जी के यहाँ से अपने घर लौटा तो बीनू बहुत प्रसन्न था।

अगले दिन सवेरे बीनू अपने दादा जी तथा चौधरी जी के साथ जिला मुख्यालय पर स्थित वन विभाग के कार्यालय पहुँचा। उन लोगों ने वन विभाग के अधिकारी को अपनी योजना बताई। उनकी बाते सुन कर वन-विभाग के अधिकारी बहुत प्रसन्न हुए और बोले—"अरे वाह। यह तो सचमुच बहुत खुशी की बात है। हम तो प्रति वर्ष वृक्षारोपण के लिए लोगों में जागरण पैदा करने हेतु हजारों रुपये विज्ञापन पर खर्च कर देते हैं। अगर आप लोग स्वतः इस अभियान में हमारा सहयोग करने के लिए तैयार हैं तो हमारे लिए इससे अधिक प्रसन्नता की बात भला और क्या हो सकती है? आप लोग पौधों की जिम्मेदारी हमारे ऊपर छोड़ दीजिए। अभी बरसात शुरू होने में एक माह से भी अधिक समय शेष है। इस समय का उपयोग आप लोग वृक्षारोपण के लिए स्थान चयन करने और

गड्ढे तैयार करने में कीजिए। जब बरसात प्रारम्भ हो जाय तो आप ट्रेक्टर ट्राली लेकर आ जाइएगा। पौधे आपको तैयार मिलेंगे।''

''लेकिन एक बात का ध्यान रखिएगा महोदय। हमें यूकैलिप्टस, जंगली बबूल, गोल्डमोहर और कनेर आदि के पौधे नहीं चाहिए। हमें तो आम, महुवा, नीम, जामुन, गूलर, कटहल और बरगद तथा पीपल आदि के छायादार, फलदार, और दीर्घजीवी वृक्षो के पौधे चाहिए।'' बीनू बोल पड़ा।

''ठीक है भाई। हम आपकी बात समझ गये। हम अपनी तरफ से पूरा प्रयास करेंगे कि हम आपको उसी किस्म के पौधे दें जैसा आप कह रहे हैं। लेकिन एक बात ध्यान देने की यह है कि इस प्रकार के पेड़ों के लिए काफी अधिक भूमि की आवश्यकता होती है। इन्हें रोपते समय दो पौधों के बीच में काफी जगह छोड़नी पड़ती है और इनकी देख-भाल भी औरों के मुकाबले अधिक करनी पड़ती है। इसलिए आप उतने ही पौधे ले जायें जितनी पूरी तरह से तैयार कर सकें।'' वन अधिकारी ने कहा।

''वैसे तो हमारे गाँव में स्थान की कमी नहीं है। फिर भी यदि आप समझते हैं कि पाँच सौ पौधे बहुत ज्यादे हो रहे हैं तो आप तीन सौ पौधे ही दे दीजिए। हम आपके निर्देशानुसार गड्ढे तैयार रखेंगे।'' चौधरी जी ने कहा और वन अधिकारी से पौधों के सम्बन्ध मे पूर्ण आश्वासन लेने के बाद वे लोग गाँव लौट आए।

गाँव लौटने के बाद उन लोगों के सामने प्रमुख समस्या थी पौधों के लिए गड्ढे तैयार कराने की। ग्राम प्रधान चौधरी जी ने बात-बात मे तीन सौ गड्ढे तैयार कराने का आश्वासन तो दे दिया था लेकिन उनको स्वयं यह कार्य काफी कठिन लग रहा था। बीनू ने सुझाव दिया कि किसी दिन शाम को सभी गाँव वालों की बैठक बुलाई जाय और उन्हें वृक्षारोपण के लाभ बता कर इस कार्य में

सहयोग के लिए प्रेरित किया जाय। प्रधान जी ने दो दिन बाद की तिथि निश्चित की और उस दिन शाम केसमय परशुराम मंदिर के चबूतरे पर बैठक होने की सूचना पूरे गाँव में प्रचारित करा दी।

इस बीच बीनू के वापस जाने का समय भी आ गया। वह सिर्फ एक सप्ताह के लिए गाँव आया था। उसने सोचा कि यदि वह शहर लौट गया तो वृक्षारोपण की यह योजना धरी की धरी रह जाएगी। उसने अगले ही दिन डाकघर जा कर अपने पापा के नाम तार से खबर भेज दी कि वह गर्मी की पूरी छुट्टियाँ गाँव में बिता कर ही शहर वापस लौटेगा।

निर्धारित तिथि को बाजार मे स्थित परशुराम मंदिर के चबूतरे पर गाँव के ढेर सारे लोग एकत्र हुए। सर्वप्रथम चौधरी जी ने बैठक आयोजित करने के उद्‌देश्य की जानकारी दी और तत्पश्चात मुख्य वक्ता के रूप में बीनू को खड़ा कर दिया। बीनू ने विभिन्न प्रकार के प्रदूषण तथा उनके कारण होने वाले नुकसान की विस्तार से चर्चा की। फिर उसने वृक्षों से होने वाले लाभ और उनको काटने से होने वाली हानि के विषय में बताते हुए वृक्षारोपण की आवश्यकता बताई। इतने छोटे से लड़के के मुँह से इतनी तार्किक और जानकारी भरी बातें सुनकर गाँव वालों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। अपने भाषण के अन्त में जब बीनू ने बताया कि उसने जिले के वन अधिकारी से तीन सौ पौधों के लिए बात कर ली है और गाँव वालों की तरफ से उनको यह आश्वासन भी दे आया है कि बरसात से पहले वह तीन सौ गड्‌ढे तैयार करा लेगा तो अपने आप सैकड़ों गाँव वाले उसके साथ सहयोग करने को तैयार हो गये।

अगले ही दिन से गाँव में जगह-जगह गड्‌ढे खुदने प्रारम्भ हो गये। बीनू सुबह-शाम घूम-घूम कर लोगों से मिलने तथा गड्‌ढों का निरीक्षण करने लगा। उसका कहना था कि हर व्यक्ति अपने घर के

गड्ढा तैयार करे। जिसके घर के पास जगह उपल
सार्वजनिक स्थान पर अथवा सड़क के किनारे गड
देखते ही देखते तीन सौ गड्ढे तैयार हो गये। सब
त यह हुई कि इस अभियान में गाँव के ढेर सारे लड़
स्त बन गये। एक माह का समय कब और कैसे ब
को पता ही नहीं चला।

त प्रारम्भ होते ही बीनू ने चौधरी जी के साथ जि
जा कर वन अधिकारी से भेंट की और उन्हें गड्ढे तै
ानकारी दी। फिर नियत तिथि को वे लोग ट्रैक्टर ट्रा
ये और वन विभाग की नर्सरी से पौधे उठा लाए। र
र कर पंचायत भवन में रख दिये गये। अगले दिन
ोपने का सिलसिला शुरू हुआ। अधिक से अधिक प
लेए गाँव वालों में होड़ लग गई। न सिर्फ पुरुष ब
र बच्चे भी इस कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे
देनों में सारे पौधे गड्ढों में सकुशल रोप दिये गये।
बीनू की छुट्टियाँ भी समाप्त हो गयी थीं। इस बीच

बुलाने के लिए उसके पापा के दो पत्र भी आ चुके थे। बीनू ने सपने में वृहद वृक्षारोपण कराने का जो संकल्प लिया था वह भी पूरा हो चुका था। अतः उसने वापस लौटने की तैयारी कर ली।

गाँव से लौटने से पूर्व बीनू ने अपने दोस्तों को बुलाया और उन्हें समझाया—"पौधों को सिर्फ रोप देने मात्र से ही हमारी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। ये जब तक पूरी तरह तैयार नहीं हो जाते तब तक इनकी देखभाल करना भी हमारा ही दायित्व है। हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि इन पौधों को गाय, बैल या भेड़, बकरी आदि मवेशी न चर जायें।"

"तुम चिन्ता न करो बीनू भैया। हम पौधों की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखेंगे। हम इनके चारों तरफ कांटों की बाड़ लगा देंगे और यह भी ध्यान रखेंगे कि पौधे सूखने न पायें।" बीनू के दोस्तों ने उसे आश्वासन दिया।

"ठीक है मित्रों। अगले वर्ष गर्मी की छुट्टियों में मैं पुनः गाँव आऊँगा और तब हम लोग मिल कर अपने गाँव में सफाई अभियान चलायेंगे।" बीनू ने कहा और अपना बैग ले कर बस अड्डे की तरफ चल दिया। बस अड्डे तक बीनू को छोड़ने सिर्फ उसके मित्र ही नहीं बल्कि ग्राम प्रधान चौधरी जी भी आये थे।